अध्याय–पांच

मैत्रेयीपुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में ग्राम्य समाज की समस्यायें

अध्याय–5

मैत्रेयीपुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में ग्राम्य समाज की समस्यायें

भारत विकास के रास्ते पर है। यहाँ के महानगर विदेशी नगरों के साथ होड़ करने में सक्षम हैं फिर भी भारत की आत्मा गाँवों में बसती है क्योंकि यथार्थ भारत की जिंदगी वहाँ पनपी है। इसलिए आज के कथा साहित्यकारों ने भी अपने लेखन की पृष्ठभूमि के लिए गाँव को चुना है। हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों ने समाज में फैली बुराइयों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है।

समकालीन दौर विशेष रूप से 20वीं सदी के आखिरी दो दशकों को महिला रचनाधर्मिता के विस्फोट का समय कहा जा सकता है। इस दौरान महिलाओं द्वारा लिखा गया कथा साहित्य ''कालजयी'' कहने योग्य है। तब से पुरुष लेखन के समान महिला लेखन भी समाज में असर डालने लगा। ''इसी समय की महिला लेखिकाओं ने स्त्रियों की भीतरी और बाहरी तकलीफों की सच्ची अभिव्यक्ति दी। समकालीन महिला कथाकारों ने केवल एक 'टाइप' न होकर समाज के सभी संदर्भों का उद्घाटन करके अपने समय की पुर्नरचना की।''[313]

मैत्रेयी जी की कथाओं में नारी जीवन का प्रेम व्यवहारिक है, जिसमें लुकाव–छुपाव नहीं है। पत्नी नारी है; यह नारी उलझनों से भरी है; पुरुष इस उलझन को समझ नहीं पाता। नारी के जीवन में विविध रंग हैं, प्रेम, काम, संस्कार में सभी वे तत्व हैं, जिसके लिये स्त्री ने पुरुष के लिए सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। शारीरिक सुख नारी जीवन का जीवंत सुख है, जिसकी लालसा उसे जीवनभर रहती है, वास्तविकता के धरातल पर पुरुषवादी समाज के मध्य नारी का जीवन में जीवनभर समझौतों पर ही जीना पड़ता है। इन्हीं सब प्रश्नों के उत्तर के साथ नारी की आजादी का स्वरूप भी सामने आकर अवरुद्ध है। मैत्रेयी जी ने अपनी सभी कथाओं में स्त्री की स्थिति को उजागर किया है।

इसके अतिरिक्त मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में भौतिक वादी कृत्रिम नगरी सभ्यता से दूर गाँव के प्रकृति की मनोहारी गोद में स्वाभाविक जीवन जीने वाले

---

313 डॉ सुमा वी.राव– मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में मानवीय संवेदना, लोक प्रकाशन गृह, दिल्ली, संस्करण – 2010, पृ0सं0 124

सरल, सहृदय, भोले और गुण–दोष युक्त मानव–समूह की समस्त जिंदगी को उसकी सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना के संदर्भ में व्यक्तित्व का वर्णन मिलता है।

(क) मैत्रेयीपुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण समाज की समस्याएँ

जहाँ तक इनके ग्रामीण जीवन का परिदृश्य है तो उन्हें बचपन से ही बुंदेलखंड़ का ग्रामीण परिवेश मिला जहाँ का वातावरण उनके मन को हमेशा मोहित करता था। मैत्रेयी जी ने अपनी पारखी दृष्टि से ग्रामीण जीवन में रची, बसी रूढ़ियों, परम्पराओं, मूल्यों और विश्वासों के पीछे दबी हुयी विसंगतियों को बड़ी ही सहजता और बौद्धिक चातुर्य से अपने लेख में लिखा।

मैत्रेयी पुष्पा का वास्तविक नाम 'पुष्पा हीरालाल पांड़ेय था लेकिन उनके पिता हीरालाल पांड़ेय मैत्रेयी कहकर, जबकि माता पुष्पा कहकर उन्हें पुकारती थी। इस प्रकार उन्होंने माता–पिता के प्रिय नाम से 'मैत्रेयी पुष्पा' से साहित्य क्षेत्र में प्रवेश किया।

मैत्रेयी का अर्थ है 'ज्ञानवान' पौराणिक कथाओं के अनुसार मैत्रेयी याज्ञवल्क्य की पत्नी थी। उन्होंने अपने पति ऋषि से कोई संपदा नहीं माँगी, कोई सुख नहीं माँगा बस, ज्ञान की माँग की थी। मैत्रेयी का स्वभाव विद्रोही था। वह अन्याय, अत्याचार, दंभ, भ्रष्टाचार, शोषण, व्यभिचार के विरोध में आवाज उठाती हुई दिखाई देती है। इसके कई उदाहरण उनके कृत्तित्व में दिखाई देते हैं।

मैत्रेयी के साहित्य में दलित विमर्श तथा स्त्री विमर्श दिखाई देता है। साधारण आदमी से मैं यह उम्मीद नहीं करती, लेकिन लेखकीय दायरों में, जहाँ उच्च मध्यम वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग के शोषित, वंचित, आदिवासी जनजातियों के लोग और विभिन्न समाजों की स्त्रियों का साहित्य आता है, उनसे तो उम्मीद की जा सकती है कि मनुष्य परिवेशगत, जातिगत और नस्लगत दबाओं को समझें। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने जीवन में जिन परिस्थितियों का सामना किया, वही उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा हमें दिखाया। उनके साहित्य में स्त्री विमर्श के साथ–साथ आंतरिक घुटन, स्त्रीयों की व्यथा, दशा को भी बारीकी से उकेरा गया है। मैत्रेयी जी ने अपने कथा साहित्य को जीवन की जीवंतता से भी दंभ भरा है। मैत्रेयी पुष्पा के लेखन में पुरुष समाज द्वारा स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का अंकन है। 'इंदन्नमम्',

'चाक्', 'झूलानट', 'अल्मा कबूतरी', 'कस्तूरी कुंडल बसै' आदि के माध्यम से पुरुष समाज द्वारा बनायी गयी नैतिक संहिताओं में जकड़ी नारी की नियति का बेजोड़ चित्र प्रस्तुत करती है। उनमें जो भी संचय है वह नारी को शक्ति और उसको वेबाकपर परिलक्षित करती है। नारी व्यथा के साथ–साथ जीवन के प्रति संघर्ष की मीमांसा भी है। मैत्रेयी जी ने अपने छोटे से साहित्य संसार में स्त्री–पुरुष जीवन की प्रत्येक समस्या पर दृष्टिपात कर मानव मन के हर कोने में झांका। आपके कथा साहित्य में 'आँगनपाखी', 'कस्तूरी कुण्डल बसै', 'झूलानट', 'इदन्नमम्', 'कही ईसुरी फाग', 'अल्मा कबूतरी', 'चाक' व 'बेतवा बहती रही' का आँचलिक उपन्यासों में प्रमुख स्थान है। मैत्रेयी जी के कहानी संग्रह 'चिन्हार', 'ललमनियाँ' व 'गोमा हँसती है', भी ग्रामीण पृष्ठभूमि पर ही आधारित कहानियाँ हैं, स्त्री–विमर्श, खुली खिड़कियों में स्त्री को मनुष्य रूप में जीवन देने की मांग की गयी है। उन्होंने बचपन से ग्रामीण जीवन को बड़ी नज़दीकी से देखा था, जो नारी जीवन के हर हिस्से को छूता है।

मैत्रेयी जी ने अपनी कलम से नारी के चरित्र को उकेरा है जो समाज में तिरस्कार और अवहेलना की पात्र है। जो क्षेत्रीय परम्पराओं, बोली, वेशभूषा व प्रथाओं में रची बसी अपनी आजादी यथार्थ जिन्दगी के लिए जूझती हुई साहित्य पटल पर चलायमान है। मैत्रेयी जी ने नारी की हर पीड़ा को अपने साहित्य में उकेरा है और उन्होंने अपने साहित्य में स्त्री–पुरुष जीवन की प्रत्येक समस्या का वर्णन किया है। मैत्रेयी जी ने अपने कथा साहित्य में वर्तमान समाज पर तीक्ष्ण कटाक्ष किया है, जो उन्होंने अपने साहित्य में अपने पात्रों के द्वारा दिखाया है। मैत्रेयी के अधिकांश उपन्यास व कहानियाँ नारी प्रधान हैं। उन्होंने इन स्त्रियों की आवाज को बुलन्द किया है। उन्होंने समाज के यथार्थ को प्रकट करते हुए पाठक को सोचने पर मजबूर कर दिया।

'इदन्नमम्' उपन्यास में प्रमुख पात्र मन्दा है। इदन्नमम् में मन्दा के संघर्षी जीवन की व्यथा कथा को उकेरा गया है। इस कथा में समाज के स्वार्थी एवं पिछड़े रूप को व्यक्त किया गया है। इसकी कथा में बऊ की बहू, प्रेम अपनी तेरह वर्षीय पुत्री मन्दा को रतन यादव अपने आदमियों की मदद से उठा लेना चाहता है। इसलिये बऊ अपनी वंशबेल की सुरक्षा के लिए सहयोग की आशा से श्यामली गाँव

के न्यायप्रिय मुखिया पंचमसिंह के घर सोनपुरा गाँव के ही ग्रामीण गनपत के साथ मन्दा को लेकर पहुँचती है।

'चाक्' में मैत्रेयी जी ने मर्यादा और परम्पराओं के नाम पर हो रहे अत्याचार का बखूबी वर्णन किया है। साथ ही स्त्रियों पर हो रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार पर भी कटाक्ष एवं व्यंग्य किया है। चाक् की नायिका सारंग है, जो सम्पूर्ण कथा के चारों ओर घूमती है। सारंग जो अपनी सौतेली माँ को अपने व्यक्तिगत जीवन में व्यवधान लगाने के कारण कन्या गुरुकुल में भेज दी जाती है। वह अंतरपुर गाँव के रंजीत की बहिन है। अपनी बुआ की विवाहित बेटी की हत्या से दुखी सारंग आरोपियों को सजा दिलाना चाहती है।

कस्तूरी कुंडल बसै में आपसी प्रेम, घृणा, लगाव और दुराव की अनुभूतियों से रची कथा में बहुत सी बातें ऐसी है, जो मैत्रेयी के जन्म के पहले ही घटित हो चुकी थी। इस कथा में नारी के अस्तित्व की लड़ाई है, जहाँ नारी भी आजादी चाहती है पर वो इसके लिए कुछ नहीं कर पाती, पर मूक रहने से भी काम नहीं चलता। "जो हमारा नहीं उसके लिये रोना क्यों?"[314]

कही ईसुरी फाग इस उपन्यास में ईसुरी एक प्रसिद्ध फागवारा है। यह केवल फागती ईसुरी और उसकी बदनाम प्रेमिका रजऊ की कहानी नहीं अपितु स्त्री पुरुष के दुःखद सम्बन्धों, स्त्री–जीवन की पीड़ा और विद्रोह की कहानी है। जिसकी फागें लोक प्रचलित हैं, जो गाँव की ही एक विवाहित स्त्री रज्जो को देखकर उसके रूप–रंग से प्रभावित होता है और उसके हर हाव–भाव से प्रभावित है। उसी आकर्षण में बंधा होकर रज्जो के नाम की फागें गाता रहता है। यह सब रज्जो की सास को पसन्द नहीं है। रज्जो की सास ईसुरी को कसम देकर रज्जो का नाम फागों में जोड़ने से इन्कार कर देती है। तभी ईसुरी अपनी फागों में रज्जो के स्थान पर रजऊ नाम से फागों को गाता है परन्तु रज्जो का पति ईसुरी पर शक करता है और वह ईसुरी को गाँव से मारपीट कर भगा देता है।

अगनपाखी मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने लघु उपन्यास "स्मृति दंश" को 'अगनपाखी' नाम से फिर से लिखा। अगनपाखी की कथा का प्रारम्भ सामंती परिवार

314 मैत्रेयी पुष्पा, कस्तूरी कुंडल बसै, राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2012 पृ0 सं0 23

के निःसन्तान कुंवर विजय सिंह की मौत के बाद से शुरू होता है। कथा में भुवनमोहिनी के जीवन की व्यथा है। भुवन के पति मानसिक रूप से विक्षिप्त थे, उनकी मृत्यु के बाद सम्पत्ति के लिए दिए गए हलफनामें से ही इस कथा की शुरुआत होती है।

बेतवा बेहती रही मैत्रेयी जी के दूसरे उपन्यास ''बेतवा बहती रही'' का प्रकाशन सन् 1994 में किया गया। 6 वर्षीय मीरा राजगिरि अपने नाना–नानी के घर भेज दी जाती है। मीरा की माँ का देहांत उसके बचपन में ही हो गया था। विजय और उदय भाई अपनी दादी के पास चन्दनपुर रहे। मीरा अपने ननिहाल ही रह गई। प्रारम्भ में मीरा को यहाँ अच्छा नहीं लगता था, किंतु बाद में धीरे–धीरे उसका मन लग गया।

मीरा की हम उम्र सहेली उर्वशी यहाँ बन गई थी। नाना और उर्वशी के घर के बीच में एक दीवार थी, वो भी मीरा ने गिरवा दी। उर्वशी बहुत ही गरीब परिवार की थी। उर्वशी के पिता के पास नाममात्र की जमीन है, जिससे उसके घर का खर्च बड़ी ही मुश्किल से चलता है। उर्वशी का एक भाई है, जो उससे बड़ा है। उर्वशी बड़ी ही सुन्दर है, उर्वशी, मीरा के नाना के घर के बीच एक दीवार थी, जो मीरा ने गिरवा दी थी। जो उनकी दोस्ती का आज भी प्रतीक है।

मैत्रेयी जी के 'त्रियाहठ' उपन्यास का प्रारम्भ चुनाव में मीरा मामी के प्रधान पद की उम्मीदवारी के प्रचार–प्रसार से होता है। यहीं मीरा को उर्वशी का बेटा मिलता है जो मीरा को जिज्जी कहकर सम्बोधित करता था। वह अपनी माँ की मृत्यु के सम्बन्ध में पूछता है और वह उस पर शक प्रस्तुत करता है। मीरा इस बात पर अपने पिता और परिवार का अपमान महसूस करती है। देवेश के द्वारा अपनी माँ के साथ हुये अत्याचारों में मीरा की मूकता को देख कर वह बहुत परेशान है।

'झूलानट' मैत्रेयी जी का एक अलग उपन्यास है। यह उनकी औपन्यासिक कुशलता का एक अजीब दस्तावेज है, जिसमें समांतर कहानियाँ पर्याप्त मात्रा में है। मैत्रेयी जी की दूसरी नायिकाओं से भिन्न 'झूलानट' की शीलो ने गाँव की संस्कृति और आचार–विचार के प्रति चुनौती देती है। शीलो चिरगाँव के एक गरीब परिवार से सुमेर की वधु बनकर आयी थी। सुमेर ने उसे छोड़कर शहर जाकर दूसरी शादी

की। सात बरसों तक ससुराल में शीलो को अनब्याही ही रहनी पड़ी। सुमेर की माँ की प्रेरणा से वह सुमेर के छोटे भाई बालकिशन की वधु बन गयी, बिना ब्याह के।

'अल्मा कबूतरी' में मैत्रेयी जी ने 'कबूतरा' नामक एक अपराध जन–जाति के जीवन–संघर्ष की कहानी बतायी है। कज्जा और कबूतरा के परस्पर द्वन्द्व और कबूतरा–वर्ग के शोषण, उनकी संस्कृति, शोषण के प्रति उनका विद्रोह, दलित नारी शोषण आदि का चित्रण लेखिका ने प्रस्तुत किया है। कबूतरा समाज में कदमबाई, भूरी, अल्मा, राणा, रामसिंह, सरमन, दूलन आदि पात्र हैं और कज्जे में मंसाराम, जोधा, केहर सिंह, धीरज, सूरजमान, श्रीराम शास्त्री आदि हैं। इन लोगों के बीच के संघर्ष की कहनी है 'अल्मा कबूतरी'।

मैत्रेयी जी के दूसरी उपन्यासों से अलग 'विजन' का माहौल शहरीय है और इसकी दो नायिकाएँ पढ़ी–लिखी हैं। नेत्र चिकित्सक हैं। नारी–जीवन का संघर्ष केवल गँवई अशिक्षित महिलाओं को नहीं शहरी पढ़ी–लिखी कामकाजी महिलाओं को भी झेलना पड़ा। पुरुष वर्चस्व वाले इस दुनिया में स्त्री द्वारा अपनी अस्मिता की तलाश और समाज में अपनी उपस्थिति की पहचान के लिए लड़ना कठिन कार्य है। मैत्रेयी जी ने इस उपन्यास में जुझारू नारी पात्रों द्वारा अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली नारियों की जिन्दगी का चित्रण किया है। डॉक्टरों के पेशे, नैतिकता, जीवन–मूल्यों को लेकर भी लिखा है, संभवतः यह हिंदी का पहला उपन्यास है। डॉ. नेहा और डॉ. आभा की जिन्दगी के शोषण और विद्रोह, पारिवारिक और नौकरी के क्षेत्र की कथा है 'विजन'।

5.1 वैयक्तिक एवं पारिवारिक समस्याएँ

समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य की सुप्रसिद्ध लेखिका मैत्रेयी ने अपनी भावाभिव्यक्ति तथा नारी की समस्याओं के चिंतन के लिए उपन्यास जैसे सशक्त विधा का चयन किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' 'चाक' तथा अल्मा कबूतरी जैसे सामाजिक उपन्यासों की रचना करके हिन्दी उपन्यास जगत में अपनी स्वतंत्र पहचान बना ली है। मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' एक सशक्त नारी प्रधान उपन्यास है जिसमें शोषण और अन्याय के खिलाफ संघर्षरत नारियाँ अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक दिखाई देती है। वैसे मैत्रेयी पुष्पा का संपूर्ण कथा साहित्य नारी को केन्द्र में रखकर लिखा गया है।

मैत्रेयी पुष्पा का बहुचर्चित उपन्यास 'चाक' आज के सन्दर्भों में कुछ नए सामाजिक प्रतिमान स्थापित करता है। मैत्रेयी जी ने नारी–उत्थान को सामाजिक राजनीतिक–सामाजिक परिवेश में नए अर्थ और रूप में ढालने की कोशिश में लगी हैं जिसमें मौजूद नारीवादी आन्दोलनों की प्रमुख धाराओं से निकलने वाले सवालों को भी समेटने की चेष्टा है। उनकी एक कहानी पर फिल्म बनी थी 'वसुमति की चिट्ठी' जिसमें लेखिका ने वसुमति नामक एक ऐसी औरत का चित्रण है जो अपनी इच्छा व निर्णय के अधिकार में विश्वास करती हो।

"'चाक' घूमता है तो मिट्टी को नए–नए रूप में ढालता जाता है – अतरपुर गाँव में भी सारंग को नए रूप में ढाल रहा है – समय चक्र जिसका कुम्हार श्रीधर मास्टर है। उस गाँव का सदियों पुराना सामन्ती परिवेश एवं दमनचक्र उपस्थित कर रहा है – सारंग में उन तमाम अन्यायों एवं शोषण के विरूद्ध खड़े होने का संकल्प, 'चाक' में लेखिका ने लीक से हटकर ग्रामीण सारंग के रूप में एक ऐसी महिला की छवी उभारी है, जिसमें विरोध करने की ताकत है। अन्याय को पहचानने, उसके विरूद्ध लड़ने और अपने निर्णय पर अडिग रहने की समर्थता है और इरादा है। स्त्री की परम्परागत छवि घर, पति और बच्चों से हटकर अपनी देह, अपनी कोख और अपनी इच्छा पर अधिकार की अवधारणा को गाँव के विभिन्न स्त्री चरित्रों और कथा सूत्रों में पिरोकर विकसित किया गया है।"[315]

अतरपुर (हाथरस, उत्तरप्रदेश) गाँव जाट किसानों का गाँव है जहाँ ऊँच–नीच, जात–पॉत, छुआछुत, अशिक्षा, अंधविश्वास का बोल बाला है........ परन्तु आजादी के बाद के आधुनिकीकरण के प्रयासों के प्रभाव से अछूता नहीं। इसलिए अर्न्तविरोधों का संघर्ष भी जारी है। जाट परिवार के सारंग के जीवन, चरित्र और संघर्ष को केन्द्र में रखकर ही लेखिका ने चाक का ताना–बाना बुना है। समूचे उपन्यास में औरत की व्यथा के विभिन्न रूप और उससे मुक्त होने की छटपटाहट बार–बार सामने आती है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'विजन' उपन्यास की डॉ0 आभा के वैवाहिक जीवन में कड़वाहट उत्पन्न हो जाने पर उस परिवार, पड़ोस, अपने कार्यक्षेत्र में हर कहीं संघर्ष करना पड़ता है। पिता उसे अपनी लाचारी को प्रकट

---

315 विजय बहादुर सिंह – सामाजिक विमर्श के आइने में 'चाक', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 2014, पृ0सं0 163

करते हुए समझौता करने की सलाह देते हैं। लेकिन स्वाभिमानी आभा झूकती नहीं है। अपने अस्तित्व के प्रति वह सचेत नारी है।

वह पुरूष के दम्भ और उनकी मानसिकता समझ गई है। उसे घर और बाहर के पुरूषों के साथ बराबर अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़नी पड़ रही है। उसका कहना है, ''कमाल है, अपनी शारीरिक ताकत के बल पर पुरूष हर अधिकार छीन लेना चाहता है। दुनिया का कर्ताधर्ता बना हुआ है। देख रहे हैं कि थोड़े से मेल डॉक्टर्स ने औरतों की, मरीजों की और छोटे लोगों की दर चींटी जैसा कर दी है। ऐसा अब नहीं होता रहेगा। सब की अपनी–अपनी जगह होती है। मरीज हों, तो हम हैं। छोटे कर्मचारी है तो हम सफेदपोश हैं और इस जगत में बुद्धि और ज्ञान की जगह तो स्त्रियाँ अपना बेहतर परिचय देंगी।''[316]

उपन्यास में डॉ0 आभा अपने अंतः सघर्ष के कारण क्षेत्र को ही अपना जीवन लक्ष्य बनाती है। नेहा पति और ससुर से उचित सहयोग न मिलने पर कुंठित बन अंत में मानसिक संतुलन खो बैठती है। वही डॉ0 बिन्दु बत्रा, डॉ0 जसवीर सिंह की पुत्र वधू बनकर अपनी योग्यता और प्रतिभा के बल पर अपने पति और डॉ0 जसवीर सिंह राज करती है। उसे ससुर का भी सहयोग मिलता है। डॉ0 बिन्दु बत्रा के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने यही साबित करने की कोशिश की है कि कामकाजी स्त्री हो या धरेलू स्त्री को अगर उचित प्रेरणा, सहयोग, प्रोत्साहन मिले तो वह किसी भी प्रकार के संघर्ष को वह अपनी योग्यता को सीढ़ी बनाकर आसमान छू सकती है।

5.2 सामाजिक समस्याएँ

मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री–विमर्श का प्रधान क्षेत्र हिन्दु समाज है, जिसका वे स्वयं अंग थीं। उन्होंने अपने उपन्यासों में भारतीय स्त्रियों की स्थिति एवं छवि की सामाजिक–सांस्कृतिक परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में जाँच–पड़ताल की है, जहाँ स्त्री के व्यक्तित्व को दबाकर एकांगी बनाने का जाना–बूझा उद्यम हुआ हैं इनके उपन्यासों में सामाजिक परिस्थितियों और समस्याओं का ऐसा पटल है, जिसमें ये परिस्थितियाँ और समस्यायें अभिव्यक्ति पाती है। इसी परिपेक्ष्य में इनके उपन्यास न केवल समाज, बल्कि जीवन का भी दर्पण हैं। लेकिन यह मात्र निर्जीव दर्पण नहीं हैं वे

---

316 मैत्रेयी पुष्पा – विजन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002 पृ0सं0 44

इनमें सामाजिक यथार्थ का चित्रण करती हैं। यह चित्रण पाठक को ही नहीं अपितु पूरी समाज को समान ढंग से प्रभावित करता है।

उसी प्रकार से 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास की भूरी कबूतरी अपने पुत्र रामसिंह को शिक्षित करने के लिए वैश्यावृत्ति को अपनाती है। पुत्र की शिक्षा के लिए देह के रास्ते से गुजरना उसे स्वाभाविक ही लगता है। पति की मृत्यु के बाद उसको यही कारगर रास्ता नजर आता है क्योंकि अन्य कबूतरा स्त्रियों की तरह वह अपने बेटे को जनजाति की संस्कृति में नहीं ढालना चाहती थी वह उसे शिक्षित कर नयी पहचान देना चाहती थी। जिसका चित्रण लेखिका ने उपन्यास में इस प्रकार चित्रित किया है, "बस्ती की सबसे पहली माँ थी भूरी, जिसने बेटे को कुल्हाड़ी–डंडा न थमाकर पोथी–पाटी पकड़ाई। और मन कागज की तरह हल्का कर लिया। माना कि मद के प्यासे लोग ईमान छीनते और वह धरती पर लेटी सरग के तारों में रामसिंह को सितारे की तरह टांक देती है।"[317] बेटे की विद्या के लिए देह से गुजरने वाली भूरी को जान से हाथ धोना पड़ता है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास की नायिका अल्मा बलत्कार नारकीय जीवन व्यतीत करने के बाद रामशास्त्री की पत्नी बनती है और पति का भाषण लिखने का काम करती है। पति की मृत्यु के पश्चात् राजनीति क्षेत्र में कदम रख संसद की शोभा बन जाती है। 'इदन्नमम' उपन्यास की नायिका केवल समाज सेविका नहीं है। अभिलाख जगेसर जैसे क्रेशरों का शोषण सहचर भी अपने लक्ष्य से नहीं हटती। ट्रैक्टर खरीदकर गांव वालों से चलवाती है, अर्थ उपार्जन का नया माध्यम खोज लेती है। 'कही ईसुरी फाग' उपन्यास की ऋतु की मां, पति द्वारा छोड़ देने पर स्वयं कढ़ाई–सिलाई कर अपनी बेटी ऋतु की परवरिश करती है। पांच सिलाई मशीन खरीद कर अन्य स्त्रियों को भी काम दिलाने में सहयोग देती है। स्वयं आत्मनिर्भर बनती है और बेटी को पी–एच–डी. तक पढ़ाने का दम भी रखती है। मैत्रेयी पुष्पा ने इन उपन्यासों के माध्यम से नारी की अंतः संघर्ष और उसके जीवन लक्ष्य को एक साथ चित्रित करने की कोशिश की है।

---

317 मैत्रेयी पुष्पा – अल्माकबूतरी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण – 2000, पृ0सं0 75

5.3 आर्थिक समस्याएँ

हमारे जटिल समाज में हर चीज़ की तरह स्त्रियों की हैसियत भी कहीं न कहीं आर्थिक बुनियाद पर टिकी है। औरत की दोयम दरजे की हैसियत का मूल आधार है– उनकी आर्थिक पराधीनता जिसका मूल कारण है पुरूषात्मक सत्ता। जगदीश्वर चतुर्वेदी इस संदर्भ में कहते हैं:

''स्त्री की स्वाधीता, समानता, सम्मान, सत्ता में शिरकता का संघर्ष और शिक्षा एवं रोजगार के संघर्ष को पितृसत्ता विरोधी साहित्य की कोटि में रखा जाना चाहिए। स्त्री की पराधीनता को आर्थिक पराधीनता से जोड़कर देखने वाली रचनाएँ भी इसी कोटि में आयेंगी। घरेलू काम–काज एवं घरेजू दासता के छोटे–छोटे रूपों का रूपायन, स्त्री को पुण्य या वस्तु में बदलने एवं स्त्री को माल बना देने वाली मनसिकता के खिलाफ संघर्ष को व्यक्त करने वाली रचनाएँ इसी कोटि में आयेंगी।''[318]

जगदीश्वर चतुर्वेदी ने स्त्री लेखन की जो विशेषताएँ गिनायी हैं, मैत्रेयी पुष्पा की औपन्यासिक कृतियाँ उन पर पूर्णतः खरी उतरती हैं। उन्होंने स्त्री–विमर्श के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के साथ ही साथ अनेक आर्थिक सवाल भी उठाये हैं। जोकि नारी को आजीवन पराधीन रखते हैं। आर्थिक पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी स्त्रियों के हाथ में न अपनी देह है, न अपना पैसा और न ही अपने रिश्ते। पुरूष जब चाहता उसे अपनी संपत्ति एवं रिश्तों से अलग कर देता है।[319]

'इदन्नमम' की मंदाकिनी की विशेषता यह है कि शोषित होने से इंकार करती है। टूटने आदर्शो को छोड़ना स्वीकार नहीं करती। गाँव वालों की कानाफूसी, व कैलाश मास्टर द्वारा बलात्कार के कटु अनुभव के बीच बड़ी हुई मंदा शीघ्र ही समझ जाती है कि अपनी लड़ाई खुद लड़नी होती है। मंदा अशिक्षित होते हुए भी अपने गाँव के वंचितों, शोषितों और अभावग्रस्त लोगों के लिए संघर्ष करती है, गाँव वालों में लोकजागृति फैलाने का पूरा प्रयास करती है। लेखिका ने अशिक्षित एवं

---

318 चतुर्वेदी जगदीश्वर – स्त्रीवादी साहित्य विमर्श – अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली – संस्करण : 2011

319 डॉ0 शोभा यशवंते–मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन, विकास प्रकाशन, कानपुर, संस्करण –2009, पृ0सं0 8

विपन्न ग्रामीण समाज के आर्थिक शोषण का भीषण चित्र खींचा है। मैत्रेयी ने कहा है कि नारी भले ही शिक्षित हो या अशिक्षित उसके ऊपर अन्याय अत्याचारों का स्वरूप बदल रहा है।

''इतिहास साक्षी है कि पुरूष ने स्त्री को जिन दो मोर्चो पर लगातार कुचला है उनमें से एक अर्थ और दूसरा सेक्स। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने के लिए संघर्ष करती हुई स्त्री, महिला लेखिकाओं की प्रिय थीम है।''[320]

5.4 शैक्षणिक समस्याएँ

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में नारी शिक्षा की समस्या को भी गंभीर रूप से उठाया है। शिक्षा पाकर युगों–युगों की पीड़ित शोषित आधारहीन नारी अपने पैरों पर खड़ी होने योग्य बन सके। परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों के साथ ही साथ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सके।

मैत्रेयी जी के यहाँ अधिकांशः कम पढ़ी लिखी ग्रामीण स्त्रियाँ हैं जोकि शिक्षा के अभाव में अनेक समस्याओं का सामना करती हैं। 'इदन्नमम' की बुआ से उसकी जमीन के कागज़ों पर धोखे से अँगूठा लगवा लिया जाता है। कहीं न कहीं इसका एक कारण शिक्षा का अभाव भी है। जोकि बुआ एवं मंदाकिनी के इस कथन से उजागर होता हैः

''बऊ की कराहती हुई आवाज उभरी, ''बेटा..... किस बखत लगाया अँगूठा? आसे कबगये कचहरी? दइया, कब हुआ बैनामा? हमें तो कुछ नहीं मालूम।.... बऊ केस के समय बहुत से कागज थे, अँगूठा भी लगाया, क्या मालूम कि छल से'.......[321]

अपने उपन्यासों में मैत्रेयी जी इस समस्या की विवेचना तो करती ही हैं, साथ ही समाधान एवं संघर्ष भी प्रकटर करती हैं। 'कस्तूरी कुण्डल बसै' उपन्यास की नायिका कस्तूरी शिक्षा प्राप्त करते के लिए परिवार एवं समाज से संघर्ष तो करती ही है, साथही समाज की अन्य स्त्रियों को भी शिक्षा के प्रति सचेत करती है। यहाँ तक कि वह अपनी पुत्री को ऐसे कॉलेज में शिक्षा दिलवाती है, जहाँ लड़के–लड़कियाँ साथ अध्ययन करते हैं। कस्तूरी का यह आत्म कथन

---

320 पुष्पा मैत्रेयी–आवाज–सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली – संस्करणः प्रथम, 2012
321 मैत्रेयी पुष्पा, इदन्नमम, पृ० 26

पढ़ने–लिखने की आकांक्षा एवं लगन को व्यक्त करने के साथ गाँव की स्थिति को उजागर करता हैः

''नम्बरदार कहते हैं–शहर की स्त्रियाँ विद्या–बुद्धि में आगे रहती हैं। रहेंगी, क्यों नहीं रहेंगी, उनके पास पढ़ने–लिखने के साधन हैं। स्कूल–विद्यालय हैं। कस्तूरी ऐसे साधन कैसे पाये? इस भूलभुलैया में ही अटक कर रह जाना है। समय किसी का इन्तजार करता है कि उसका करेगा? यह गाँव भी कैसा है, मंदिर दो–दो हैं, स्कूल एक भी नहीं। आज के नेता कहते हैं– पढ़ो–पढ़ाओं, यही पुण्य है– मगर कहाँ पढ़ो पढ़ाओ? उसने कल्पना में एक स्कूल की तस्वीर तैयार की, मन आह्लाद से भर उठा। मगर मास्टर कौन? कापी, कलम, स्याही का खर्चा कहाँ? तमाम तरह के झंझट।''[322]

इतने अभाव एवं तमाम तरह के झंझटों के बावजूद भी कस्तूरी पढ़ने का संकल्प नहीं छोड़ती, बल्कि अन्ततः संघर्ष करती है। वह गाँव की स्त्रियों की तरह–तरह के प्रताड़ना एवं अपमान भरी बातें सुनती है, किन्तु परवाह करने के बजाए उन गुस्सैल ग्रामीण स्त्रियों को समझाते हुए कहती हैः

''देखों, हम अपनी तकदीर बदल तो नहीं, पाते, सँवार तो सकते हैं। ताजिन्दग्री पिछली यादों और दुर्भाग्यों को रोते पीटतें रहें तो आगे क्या बनेगा।''[323]

'झूला नट' उपन्यास की शीलो अशिक्षित है लेकिन अपने देवर बालू (बालकिशन) से थोड़ी सी विद्या बाँच कर धीरे–धीरे रामायण और हनुमान चालीसा पढ़ने लगती है। अपनी छठी उँगली को अशुभ का चिन्ह् मानकर काट डालती है। उसका पति सुमेर जब जमीन–जायदाद के बँटवारे की बात छेड़ता है तो वह जवाब देती है, ''बालकिशन तो ऐसे ही हमारे लिए है जैसे तुम्हारे लिए दूसरी औरत, बिन ब्याही, मनमर्जी की .....। जमीन जायदाद की बात रहने दो कि यह मामला तो अब भी हमारे तुम्हारे बीच ही है।''[324] 'गाय की खाल में बाघिन' बन शीलो अपना अधिकार समझती है और उन सबको अकेली चुनौती देती है।

---

322 मैत्रेयी पुष्पा, 'कस्तूरी कुण्डल बसै', पृ० 142

323 मैत्रेयी पुष्पा, 'कस्तूरी कुण्डल बसै', पृ० 147

324 मैत्रेयी पुष्पा, 'झुला नट', पृ० 27

5.5 यौन शोषण की समस्याएँ

मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास एक धमाका करता हुआ हिन्दी साहित्य जगत में काफी चर्चा का विषय बना। प्रस्तुत उपन्यास के कुछ प्रसंग श्लील–अश्लील, नैतिक–अनैतिकता के मानदंडो को लेकर काफी सकारात्मक–नकारात्मक चर्चा साहित्यलोचकों ने की। उपन्यास में पुरूष संबंधो को लेकर स्त्रियों की भूमिका खुली मानसिकता तथा स्वछंद जीवन शैली का परिचय कराती है। पुरूष समाज में स्त्री का स्वैच्छिक यौन संबंध अपराध माना जाता है। परन्तु उपन्यास की नायिका सारंग विवाहित होते हुए भी श्रीधर प्रजापति से अपने संबंधो को गलत नहीं मानती।

मैत्रेयी जी ने रेशम का चरित्र अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली साहसी स्त्री के रूप में अभिव्यक्त किया है। रेशम पति की मृत्यु के बाद घर में कैद रहकर अपने भाग्य पर आँसू बहाने के बदले अपने जीवन का रास्ता खुद तय करती है। किसी पुरूष की पत्नी मर जाए तो पुरूषों के लिए पुनः विवाह करने पर एतराज नहीं है। लेकिन स्त्री के लिए मर्यादा का पालन करने की जबरदस्ती क्यों लादी जाती है ? इस तरह से वह मानसिक व शारीरिक शोषण का शिकार होती है।

विधवा रेशम जब दूसरे पुरूषों के साथ संबंध रखती है तब उसकी सास (एक स्त्री ही) हुकुमकौर उसको लताड़ती हुई कहती है – ''रड़ी, मेरे पूत की चिता तो सीरी हो जाने देती।''[325] तब रेशम सास को मुँहतोड़ जवाब देती है –

''अम्मा, तुम तो विरथा ही दात किटकिटा रही हो। तुम्हारे पूत की चिता ठंडी हो जाने से क्या मेरी देह की आग बुझ जाती ? जीतों–मरतों का भेद भी भूल गई तुम ? बेटा के संग मैं भी मरी मान ली ?''[326] रेशम अपनी भावनाओं को रौदना नहीं चाहती। स्त्री–पुरूष के भेद से ऊपर उठकर मानवी रूप में जीना चाहती है। वह कहती है – ''आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछतीं कि तू किसके संग सोया था ? अब उसकी बाँह गह ले। मेरे पीछे तेरही तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खूब हो रही होती कि पूत की उजड़ी बस गई। पर मेरा

---

325 मैत्रेयी पुष्पा – चाक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2004 पृ0सं0 25
326 मैत्रेयी पुष्पा – चाक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2004 पृ0सं0 19

फजीता करने पर तुली हो।''[327] मैत्रेयी पुष्पा ने रेशम के माध्यम से स्त्री जीवन की वास्तविकता का कितना सटीक वर्णन किया है।

'चाक' का महत्व इस बात में भी है कि यह व भारतीय गाँव की उस महागाथा की एक नई और अगली कड़ी है, जिसकी वास्तविक शुरूआत हिन्दी में प्रेमचन्द से हुई और जिसे 'रेणु' जी ने एक निश्चित ऊँचाई तथा परिणाम तक पहुँचाया था। मैत्रेयी जी के अन्य उपन्यासों में भी नारी मनोविज्ञान का चित्रण दिखाई देता है।

5.6 दहेज समस्या/बेमेल विवाह

भारतीय समाज में पारंपरिक विवाह को एक पवित्र बंधन तथा संस्कार माना जाता है। स्त्री पुरूष के विवाह संबंध को भारतीय संस्कृति अनेक जन्मों का संबंध मानती है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में विवाहेत्तर नारी की असहनीय दयनीय स्थिति देखने को मिलता है। इसके अलावा पुरूष के विवाहेत्तर आकर्षण से स्त्री तथा परिवार के दूसरे सदस्यों के मन में उत्पन्न सन्देश तथा उसके परिणाम स्वरूप कलहपूर्ण गृहस्थ जीवन के उदाहरण भी दिखाई देते है। स्त्री पुरूष संबंध निर्माण होने के कई कारण हो सकते है। जैसे – अनमेल विवाह, पति के मरणोपरांत पत्नी की आत्मरक्षा तथा कामतृप्ति की भावना, दहेज देने में असमर्थ पत्नी के प्रति पति का उपेक्षा भाव तथा स्त्री–पुरूष की चरित्र हीनता आदि। मैत्रेयी ने अपने उपन्यासों में इन समस्याओं को दिखाने का प्रयास किया है।

'चाक' उपन्यास की रेशम विवाहित होने के बाद भी दूसरे पुरूष के साथ अनैतिक संबंध बनाती है। रेशम का पति फौज में होने के कारण साल में एक बार छुट्टी लेकर गाँव आता था और छुट्टी खत्म होते ही वे वापस चला जाता था। रेशम का जीवन पति के बिना अकेला हो जाता है और वह बिना संकोच और डर के दूसरे पुरूषों के साथ अपनी देहवासन की तृप्ति करती है। और रूप सौन्दर्य की खान रेशम विधवा हो जाती है। पति की मृत्यु के बाद वह घर में कैद रहकर अपने भाग्य पर आँसू बहाने के बदले अपने जीवन का रास्ता खुद तय करती है। वह अपनी जिंदगी में किसी को भी दखल देने का अधिकार नहीं देती। ना ही वह

---

327 मैत्रेयी पुष्पा – चाक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2004 पृ0सं0 19

छुई–मुई सा जीवन बिताना चाहती है। विधवा होने पर उसकी काम वासना की भुख मर नहीं जाती। बल्कि उसे वह निडर व साहसी देती है। वह अपने समाज की पुरखों की मान–मर्यादा, लोकलाज, तथा कानून तक की परवाह न कर दूसरे पुरूष के साथ संबंध बनाती है और गर्भवती हो जाती है। रेशम जब दूसरे पुरूषों के साथ संबंध रखती है तब उसकी सास हुकुमौर उससे लड़ते हुए कहती है – ''रंडी मेरे पूत की चिता तो सीरो हो जाने देती।''[328] तब रेशम अपने सास को भोले भाव से मुंहतोड़ जवाब देती है – ''अम्मा तुम तो बिरथा ही दांत किटकिटा रही हो। तुम्हारे पूत की चिता ठंडी हो जाने से क्या मेरी देह की आग बुझ जाती ? जीतों–मरतों का भेद भूल गई तुम ? बेटा के संग मैं भी मरी मान ली।''[329] रेशम ने गुस्सा किया न विनती। चुपचाप अपने कोठे में सो गई। वह अपनी भावनाओं को रौंदकर पतिव्रता नहीं बनना चाहतीं स्त्री–पुरूष का भेद भी नहीं मानती। लेखिका ने रेशम के माध्यम से स्त्री जीवन का यथार्थ वर्णन किया है। स्त्री की मुत्यु के बाद पति दूसरा विवाह कर सकता है समाज को इस पर कोई एतराज नहीं होता। वही कार्य स्त्री करती है तो पूरी समाज व्यवस्था उसे करारा चोट पहुँचाती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि मैत्रेयी पुष्पा ने खुली आँखों से सामाजिक यथार्थ को देखा है और नारी की वास्तविक दुःख भरी अवस्था का चित्रण 'चाक' में किया है। 'विजन' उपन्यास में डॉ0 नेहा का पति और उसके ससुर डॉ0 शरण उससे वह काम कराना चाहते हैं जो उसके अपने उसूलों के खिलाफ है। इससे पति–पत्नी के बीच दरार उत्पन्न होती है और डॉ0 नेहा सहारे के लिए अपनी गुरू डॉ0 आभा की शरण में जाती है।

5.7 विधवा एवं परित्यवता समस्या

बाल–विवाह, विधवा–जीवन की समस्याएँ आदि अशिक्षा या निरक्षरता के दुष्परिणाम हैं। नारी को विवाहित और अविवाहित दोनों स्थितियों में पढ़ने का अवसर नहीं मिलता था। उसके जीवन का समस्त विकास गृहिणी। परिवार की दासी के रूप में होता था। उसकी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं थी और न इस संबंध में वह स्वतंत्र रूप से कुछ सोच ही सकती थी।

---

328 मैत्रेयी पुष्पा – चाक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2004 पृ0सं0 56

329 म मैत्रेयी पुष्पा – चाक राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2004 – पृ0सं0 19

'झूला नट' उपन्यास की शीलो अशिक्षित है लेकिन अपने देवर बालू (बालकिशन) से थोड़ी सी विद्या बाँच कर धीरे–धीरे रामायण और हनुमान चालीसा पढ़ने लगती है। अपनी छठी उँगली को अशुभ का चिन्ह् मानकर काट डालती है। उसका पति सुमेर जब जमीन–जायदाद के बँटवारे की बात छेड़ता है तो वह जवाब देती है, ''बालकिशन तो ऐसे ही हमारे लिए है जैसे तुम्हारे लिए दूसरी औरत, बिन ब्याही, मनमर्जी की .....। जमीन जायदाद की बात रहने दो कि यह मामला तो अब भी हमारे तुम्हारे बीच ही है।''[330] 'गाय की खाल में बाघिन' बन शीलो अपना अधिकार समझती है और उन सबको अकेली चुनौती देती है।

हम मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का अध्ययन करते है तो देखते है कि भारत में विधवा स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। जो स्त्री पति के साथ ही ससुराल के अन्य सदस्यों की सेवा में अपनी जिन्दगी दाँव पर लगा देती है, वही लोग विधवा होने के बाद उस स्त्री के अपने परिवार का सदस्य भी नहीं मानना चाहते और न ही उसे संपत्ति का हक देना चाहते हैं। इनके उपन्यासों में कहीं–कहीं पर पति द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति को हड़पने के लिए पुरूष लोग विधवा स्त्री पर अत्याचार करते हैं। 'इदन्नमम' उपन्यास की बऊ एवं प्रेमा इसी शोषण का शिकार होती है।

5.8 सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार की समस्या

धर्म, जाति एवं धन के आधार पर हमारा समाज निम्न वर्गों में विभाजित है। वर्ग के अनुसार ही समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा है। मैत्रेयी जी की दृष्टि से यह वर्ग–व्यवस्था छिपी नहीं रही है। उन्होंने अपनी औपन्यासिक कृतियों में उस रूढ़ि–जर्जर वर्ग–व्यवस्था एवं वर्ग भेद को भी स्थान दिया है जिसके आधार पर स्त्री को स्थान–स्थान पर अपमानित किया जाता है।

मध्यम वर्ग में पुरूष स्त्रियों के प्रति स्वयं को उदार विचारों का व्यक्ति सिद्ध करने का प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन अपने परंपराओं तथा समाज की सड़ी–गली मान्यताओं का खण्डन भी नहीं कर पाते। मध्यवर्गीय स्त्री–संघर्ष के चित्रण के माध्यम से लेखिका इस वर्ग के मिथ्या, अहंकार तथा दिखावे को भी चित्रित करती हैं। डॉ0 का यह कथन इस तथ्य को बखूबी चरितार्थ करता हैः

---

330 डॉ0 सुमा वी. राव – मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में मानवीय संवेदना, पृ0सं0 75

"मोहतरमा.....तुम्हारी जानकारी–समझदारी इतनी नहीं है तो इसमें तुम्हारा कसूर भी क्या? घर में औरतें ही औरतें थी। मनमाना किया। वैसे औरतों को इज्जत–आबरू से क्या लेना–देना?...... माफ करना, अभी हम इतने आधुनिक नहीं। जिस समाज में रहते हैं, उसमें से आहिस्ता–आहिस्ता निकलेंगे।

"पति का संस्कृति और समाज से आहिस्ता–आहिस्ता निकलने का कारगर तरीका......उफ्! यही है शिक्षा और सभ्यता के अग्रणी परंपराओं से लदे लड़खडाते हुए चल रहे है।"[331]

इसके अतिरिक्त मैत्रेयी जी कुलीन घराने एवं देहाती सभ्य समाज की स्त्रियों की सामाजिका और अर्थिक विसंगतियों को भी प्रभावी ढंग से सामने लगती हैं। धर्मपत्नी के सुनहरे आवरण के भीतर वह भी पुरूष की पाश्विकता का शिकार हैं। उनके शोषण की कहानी घर की चारदीवारी में ही दफन हो जाती है। चाहे वह 'विजन' की नेहा हो या 'अल्मा कबूतरी' की आनंदी। यह अलग बात है क इन्हें शारीरिक शोषण का शिकार नहीं होना पड़ता, किन्तु धर्मपरायण पतिव्रता की बेड़ियों में जकड़ी जिस मानसिक यातना को झेलती हैं, वह शारीरिक उत्पीड़न से कम नहीं हैं।

मैत्रेयी जी के यहाँ वर्गीय संघर्ष करती हुई स्त्री पात्रों ने नारी पीड़ा को अभिव्यक्ति तो दी ही है, किन्तु इस पीड़ा और शोषण के विरूद्ध संघर्ष का जज्बा भी मिलता है।

5.9 ग्रामीण एवं महानगरी जीवन की समस्याएँ

हिन्दी साहित्य को सबसे बड़ा लाभ नब्बें के दशक में मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य के ग्रामीण जन–जीवन के चित्रण से हुआ है। क्योंकि नब्बें के दशक जिन लेखिकाओं ने कथा साहित्य में योगदान दिया उनमें अधिकतर मध्यवर्गीय जन–जीवन तथा नगर एवं महानगरीय जीवन–शैली से संबंधित चित्रण है। अधिकतर दांपत्य जीवन, नौकरी पेशा स्त्री की समस्याओं से संबंधित है। संक्षेप में कहा जाए तो स्वाधीनता प्राप्ति से लेकर 1990 तक हिन्दी लेखिकाओं के कथा साहित्य में गांव को छोड़कर वह सब कुछ है जिसने उसे प्रभावित किया है। इस

---

331 क्षमा शर्मा – स्त्री विमर्श, समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पटना, संस्करण –2002, पृ0सं0 81

क्रम में कृष्णा सोबती अपवाद है क्योंकि उनके कथा साहित्य में भी ग्रामीण जन–जीवन का सजीव चित्रण आया है।

''सदियों से चले आए हमारे सामाजिक–सांस्कृतिक आदर्शो के गुणगान का कदम ताल करना छोड़कर अपने समय और समाज तथा भविष्य की विद्रूपताओं को तनाव के रूप में जिन हिन्दी कथाकारों का लेखन पाठकों को प्रभावित कर रहा है और समय के साथ तेज चलने का संकेत दे रहा है उनमें मैत्रेयी जी का नाम शीर्षस्थ मानना होगा।''[332] यही कारण है कि लगभग डेढ़ दशक की छोटी सी रचना–यात्रा में मैत्रेयी ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। उनकी 'बेतवा बहती रही', 'इदन्नमम', 'चाक' 'झूलानट', 'अल्मा कबूतरी', 'अगनपाखी', 'विजन' 'कही ईसुरी फाग', 'त्रियाहठ' आदि उपन्यासों से मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसी लेखिका प्रमाणित हुई है 'जिसमें प्रेमचन्द के समान अपने समय और समाज को ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। 'इदन्नमम' और 'अल्माकबूतरी' मैत्रेयी के वे उपन्यास हैं जो न केवल रेणु की याद दिलाते हैं बल्कि उन्हें रेणु परंपरा का समर्थ अनुयायी सिद्ध करते हैं यह कहना गलत न होगा कि मैत्रेयी ने कथा साहित्य से निष्काषित इस गांव को बड़ी सिद्दत के साथ पकड़ा और उसकी सबलताओं और दुर्बलताओं दोनों को न्याय के साथ चित्रित किया है। अनुभव–विस्तार की कमी के आरोप का निराकरण करके घर की चहारदीवारी को लाँधकर, विशाल जन–जीवन का चित्रण करके मैत्रेयी पुष्पा ने लेखिका के सबलीकरण का उज्जवल उदाहरण लेखकीय संसार के सामने प्रस्तुत किया।

स्त्रीत्व के मानचित्र के संदर्भों में परंपरा एवं संस्कृति को याद करने या उसे उदाहरणों की खूबियाँ बखानने के बजाय यदि उनकी मिथकीय तहों को उधेड़ा जाता तो ज्यादा अच्छा होता। सीता–सावित्री के महिमा मंडन से हम वापस उन्हीं वर्गीय और जातीय विभाजन को बढ़ावा देने लगते हैं उन्हें तिरोति करना हमारा अभीष्ट है। भारतीय संस्कृति स्त्री के प्रति तो बेहद वर्चस्ववादी है। इसीलिए उसके प्रभाव तले विकसित हुइ समाज में प्रचलित भेदों और विभाजन का स्त्री को नुकसान उठाना पड़ा है। अतीत की जाँच–पड़ताल की तुलना में वर्तमान का संघर्ष स्त्री के

---

332 अर्जुन चव्हाण : बीसवीं सदी का कालजयी साहित्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2002, पृ0सं0 105

लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है। तमाम कठिनाईयों के बावजूद आज की स्त्री की दृष्टि में उसका भविष्य जितना सुखद और रोचक है, उतना उसका अतीत सुखद नहीं रहा। वर्तमान के आधार पर ही कहा जा सकता है कि हम स्त्रियों का अतीत सुखद नहीं थी। क्या था हमारे अतीत हैं? चिताओं पर जलती हुई औरतें, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के लिए तरसती हुई औरतें, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के लिए तरसती हुई औरतें। समाज के नियम इतने कठोर कि विरोध में स्त्री का एक भी शब्द बोलना नामुमकिन।[333]

संस्कृतिवादी अतीत के जिस स्वर्णयुग की चर्चा करते नहीं अघातें, उसमें एक भी मेघा पाटकर या किरण वेदी नहीं थी। अतीत में स्त्री ने विरोध की भाषा ही नहीं सीखी थी। आज की स्त्री प्रतिरोध की भाषा जानती है। वह जानती है कि स्त्री समस्या को वह बृहत्तर सामाजिक संरचनाओं से जोड़ पायेगी और नए संदर्भों में समझा पाएगी। वह जानती है कि समाज में शोषण और दमन कई स्तरों पर होता है वह सीता और द्रोपदी की तरह पुरूषसत्ता अन्यास को अपना आदर्श नहीं बनाती बल्कि संघर्ष करती है। संस्कृति के श्लोकों, सूक्तियों और उद्‌गारों को पढ़ने से कया लाभ होगा? वह इस पर भी विचार करती है। इस संदर्भ में प्रभा खेतान लिखती हैः

हमारे पास ब्रह्मवादिनों का इतिहास है। सीता और सावित्री की परंपरा है लेकिन कहाँ तक और कब तक इनका गुणगान और महिमा–मंडन किया जाए। जिसे हम जातीय स्मृति का इतिहास कहते और समझते हैं, वह एक दलित स्त्री की स्मृतियों से क्यों नहीं जुड़ा है? इतिहास तो उनका लिखना जाना चाहिए जिन्होंने परम्परा के दलदल से निकलने की चेष्टा की। कोई भी समकालीन स्त्री अतीत के उन उदाहरणों से प्रेरणा नहीं चाहेगी जिन्हें पितृसत्ता ने संवधिति किया। स्त्री सारी छटपटाहट तो इसी पितृसत्तात्मक व्यवस्था से मुक्ति की है। स्त्रियों की आने वाली पीढ़ी को सबसे अधिक उन मिथकीय दबाव के प्रति सजग रहना चाहिए।

---

333 खेतान प्रभा – छिन्नमस्ता – राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली – चौथी आवृत्ति – 2006 पृ0सं0 89

प्रभा खेतान के विचार केवल उनके ही विचार नहीं है बल्कि उन सारी स्त्रियों के विचार हैं। जिन्होंने प्राचीन संस्कृति को अच्छी तरह समझा है। मैत्रेयी पुष्पा नैतिकता–अनैतिकता के तराजू में तोलती हैं।

वह उस परंपरा का बहिष्कार करती हैं जिसमें नैतिक–अनैतिक माने जाने वाले नियम और उल्लघंन की सजाएँ मुकर्रर करते समय औरतों की राय नहीं ली गई। उनकी नैसर्गिक इच्छाओं, भावनाओं, अर्जित की हुई योग्यताओं एवं स्वाभाविक क्षमताओं को नजरअंदाज किया गया है। मैत्रेयी जी 'मुक्ति की दावेदारी' लेख में अपने विचार व्यक्त करती हुई कहती हैः

"परम्परा का ध्वंस, जब कहा जाता है तो स्त्री औचक सी भैचंक सी देखने लगती है–परंपरा! मेरी स्वाभाविकता के विरूद्ध मुझसे ही कराए जाने वाले कृष्ण परंपरा होते हैं? मर्यादा! वही न, जो मुझे ढंक–तोपकर, छेद बाँधकर, जाग्रत इन्द्रियों को सुन्न करके कारगर साबित होती है और उससे समाज सक्रिय है, सदियों, से, हजारों वर्षों से आज तक..... यही संस्कृति का रूप होता है। क्या कभी औरत से पूछा गया है कि यह संस्कृति उसको कितना सुख देती है, इस पर उसे कितना वर्ग होता है? संस्कृति के कटघरे स्त्री के सुरक्षाघर है। यह मान्यता औरत की महानता से जोड़ी जाती है। सामाजिक संस्कार सर्वोपरि होते हैं।... अपनी आचार संहिता के शब्दकोष में से रंड़ी, वेश्या, पुंश्चली और वदकार–वदचलन जैसे शब्द निकालकर उसके वजूद पर दे मारे। ये शब्द खासतौर पर उस औरत के लिए सुरक्षित एवं आरक्षित हैं, जो मनुष्य होने के नाते अपनी इच्छाओं का इजहार करती हैं। सपनों का हम रखती है।"[334]

सामंतों, विद्धानों और शास्त्रों के हिसाब से औरत को अपनी चेतना कील देनी है। चेतना–सम्पन्न स्त्री 'निर्लज्ज' से गुजरती हुई 'कुल्टा' तक जा पहुँचती है। इसी भय से वह संस्कृति का मुखौटा लगाकर होने वपाले अत्याचारों को अपनी नियमिक मानकर बर्दाशत करती रहती है। वह इन मान्यताओं को तोड़ती है तब भी अपने आप को दोषी मानती है। मैत्रेयी जी लिखती हैः

334 पुष्पा मैत्रेयी – खुली खिड़कियाँ – सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009 पृ0सं0 119

"हम सब जानते हैं कि औरतें इसी पाखंड के किले में अपनी चेतना को मारती रहती हैं। मर्यादा की पथरीली दीवारों में आकांक्षाओं को चिनवा देती हैं जिसे आत्मा का पवित्र जल कहते है, वह संस्कारों के पुराने सड़े–गले सूत्रों की सड़ांध से बजबजा उठता है। औरतें सोचती हैं, मेढ़कों जैसा यही सुरक्षित जीवन है। बस साँसें चलती रहें, जिंदा रहने का झूठा–सच्चा एहसास...।"[335]

5.10 जातिगत एवं वर्गगत समस्याएँ

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में ब्राह्मणवादी–सामन्तवादी, पूँजीवादी, बौद्धक– सांसकृतिक रचनाओं के परिवर्तनकारी, प्रतिरोध के लिए वंचित उत्पीड़ित समूहों– आदिवासी दलित, पिछड़ी जाति की स्त्रियों के पोटेंशल को उन्मुक्त और सक्रिय करने पर बल दिया है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में पारिवारिक बंधनो में जकड़ी हुई नारी का पारंपरिक मान्यताओं को छोड़कर आर्थिक स्वावलंबन स्वरूप का अंकन किया गया है। शिक्षा एवं यातायात की सुविधाओं के कारण लोगों के विचारों का आदान–प्रदान अधिक संभव हो पाता है।

यंत्रीकरण के कारण नवीन उद्योग–धंधो का जन्म हुआ इस कारण आर्थिक क्षेत्र में भी परिवर्तन हुए हैं फलस्वरूप जातिगत बंधन ढीले पड़ गए और लोगों में विस्तृत दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ आज व्यक्ति जाति से नहीं कार्य से उच्च माना जाता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में जाति से अधिक श्रेणी को प्रमुखता दी है आज भी पुराने व्यक्ति जाति को महत्व देते हैं पद को नहीं। लेकिन जो शिक्षित व्यक्ति है उनकी सोच में परिवर्तन आया है भले ही वह ग्रामीण परिवेश में ही क्यों न रह रहे हो। यही स्थिति 'चाक' उपन्यास में लौंगसिरी बीबी एवं सारंग के कथोपकथन से व्यक्त हुई है। "क्यों री, उस मास्टर ने लत्ता उजले पहन लिए, तब क्या वह ब्राह्मण हो गया ? दादू कितने गुनी हैं, पर बैठते है धरती पर। नेंकसे मास्टर देखता था ? क्या कहता था ? जो बड़ा है तो पापी क्या जौ की जाति बड़ी हो जाएगी ? आजकल जाति–बिरादरी! तू भी बीबी पुराने समय की बात।।"[336]

---

335 पुष्पा मैत्रेयी – खुली खिड़कियाँ – सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009 पृ0सं0 79

336 मैत्रेयी पुष्पा – 'चाक', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृ0सं0 132

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में यह व्यक्त होता है कि जाति प्रथा ने अपनी असमानता के कारण अन्याय को जन्म दिया, परन्तु वर्ग बोध की प्राथमिकता के कारण परम्परागत जाति के आधार भूत सिद्धान्त डगमगाने लगे है। इन्होंने अपने इस उपन्यास में ऐसी स्त्री को भी चित्रित किया है जो परिवार एवं समाज के रिश्तों के दावँ पर रखकर शिक्षा की ओर अग्रसर होती है। क्योंकि शिक्षा ही अर्थोपार्जन की दिशा में पहला कदम है। यद्यपि इस संघर्ष में उसे समाज की अवहेलना भी स्वीकार करना होता है एवं वैवाहिक संबंधों की भी दावँ पर रखना होता है। सारंग अपने पति से अलग स्वयं के व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए पति के विरूद्ध चुनाव में पर्चा दाखिल करती है फलस्वरूप उसके वैवाहिक संबंध डगमगाने लगते है। क्योंकि पुरूष में इतना साहस ही नहीं होता कि वह स्त्री की उन्नति को बर्दाश्त कर पाए और यही रंजीत के साथ ही होता है। परिणामस्वरूप सारंग को गद्दार पत्नी और छिनाल साली से संबोधित किया गया।

मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री एवं पुरूष को समान रूप से देखना चाहा। परन्तु पुरूष का अहम सदैव आड़े आ गया। स्त्रियाँ अब खुद कमाने लगी है इस कारण अब तक जो स्त्रियाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ती नजर आती थी वह अब अपने अधिकारों की मांग कर रही है एवं नयी ऊर्जा के साथ समाज के प्रत्येक क्षेत्रों में पुरूष की सहभागी दिखाई पड़ रही हैं। आर्थिक विपन्नता इतनी अधिक भयावह होती है कि निम्न स्तरीय व्यक्ति अपनी कन्या का सौदा कर देता है।

मैत्रेयी पुष्पा लिखते है –

> ''बिकने वाली चीजों में गाय, बैल, भैंस, जेवर, अनाज और लड़कियाँ रही।''[337]

औद्योगीकरण के फलस्वरूप पूँजीगत व्यवस्था समाप्त हो गयी है एवं निम्न वर्ग चेतना की ओर अग्रसर है। परन्तु आज भी इसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय है। निम्न वर्ग दो वक्त की रोटी के लिए समाज की इस अवस्था से लड़ रहा है। इस कारण उसका जीवन दुःख पीड़ा एवं कई यातनाओं से गुजरता है। मैत्रेयी जी ने इस उपन्यास में समाज के निम्न वर्ग और नारी के यथार्थता की पृष्ठभूमि प्रस्तुत

---

337 मैत्रेयी पुष्पा – चाक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1997, पृ0सं0 172

करने का सफल प्रयास किया। उन्होंने ग्रामीण एवं शहरी स्त्रियों की आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

5.11 धार्मिक रूढ़ियों तथा प्रथाओं अंधविश्वासों की समस्याएँ

भारतीय संदर्भ में धर्म की आड़ लेकर समाज की सबसे प्रतिक्रियावादी ताकतें नारी को घर की चारदीवारी में कैद रखना चाहती है। नारी हमारे समाज में बहुत समय तक धार्मिक अन्धविश्वासों का खिलवाड़ बनी रही है। वैदिक युग मे जहाँ नारी में देवी रूप देखा जाता था, वहीं अब घर में रहकर पति और पुत्र की सेवा करना ही स्त्रियों का धर्म हो गया है। सारे भगवान पुरूषों के बनाये हुये हैं। जिनकी विशालकार मूर्तियों के सामने नारी को भयक्रान्त और धर्मभीरू बनाया जाता है। देवियाँ भी पुरूषों ने बनायी हैं। नारी को नारी रूप में सम्मान हासिल करने के लिए देवी रूप लेना पड़ेगा, जबकि अकर्मण्य पति भी नारी के लिए परमेश्वर है। सारी आचार संहिताएँ पुरूषों ने बनाई हैं और उन्होंने दैविक जामा पहनाकर नारी को सब सहने पर मजबूर किया है। हमारे समाज का विकृत धार्मिक स्वरूप यह है कि धर्म के वही ठेकेदार जो धार्मिक मूल्यों की दुहाई देकर स्त्री पर नियन्त्रण रखते हैं, वही लोग निज स्वार्थों की पूर्ति के लिए इनका विध्वंस भी करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा 'कथा–साहित्य में सती पूजा' शीर्षक में लिखती हैं:

''विवाहित स्त्री जान जाती है कि ज़मीन जायदाद से लेकर घर–बार की मिल्कियत पिता और पति की होती है स्त्री केवल दास है। विरोध की चेतना रोने के रूप में हो सकती है। इसीलिए ही हमारा नोना पिया का मनभावन शगल बनता है। वे अरादास में रोते–भक्त को देखकर भगवान की तरह प्रसन्न हो जाते हैं।

आगे वे सती प्रथा एवं विधवा स्त्रियों की दयनीय दशा में संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करती हैं। उर्वशी इसी वशीकरण के हवाले हुई थी। ऐसी धन्य–धन्य और कृतकृत्य कि बीमारी बनाम दिनारी (धीमा जहर) से न मरती तो पति की मृत्यु के साथ जिन्दा सती हो जाती। मालिक की इतनी प्यारी नारियों की सीट स्वर्ग में आरक्षित रहती है, ऐसी मान्यता है जिन औरतों को पति या प्रेमी की अपेक्षा मिली, उनका जीवन धिक्कार का रूप बना। वे उसे लकर नदी में डूबी, कुएँ में कूंदाफाँसी पर लटकीं, तब जाकर सामाजिक मान्यता में सती कहलाई।

(ब) मैत्रेयीपुष्पा की कहानियों में ग्रामीण समाज की समस्याएँ

आज की चर्चित महिला कथा लेखिका श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा के तीन कहानी संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। 'चिन्हार', 'ललमनियाँ', 'गोमा हँसती है'। तीनों में उनकी अस्मिता की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है। नारी–शोषण के प्रति सशक्त विद्रोह, वृद्धों, अशिक्षित, विधवा नारियों का चित्रण आंचलिकता की पृष्ठभूमि में लेखिका ने अपने विचार, विद्रोह व अनुभव के साथ चित्रित किये हैं। समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता, पुरानी घिसी–पिटी कुरीतियां, शोषित बातों और विचारों को भी मैत्रेयी जी ने अपनी कथाओं में दर्शित किया है तथा उनके प्रति विद्रोह भी जताया है। आग में पुत्र विद्रोही तेवर वाली महिला कथाकार होने का उन्हें गौरव प्राप्त है।

'बेटी' कहानी की धुरी मुन्नी के आस–पास घूमती है क्योंकि समाज में अतीत से यही माना है कि बेटा सब कुछ है। बेटी कुछ भी नहीं है। इसी धारणा की शिकार मुन्नी के पांच भाई हैं। मुन्नी की माँ अपने आप को बहुत ही समृद्धशाली मानती है।

'सहचर' कहानी दद्दा जी की है, जिनके दो बेटे हैं। जिनका नाम है बंशी और लखन। वंशी खेती का काम करता है, लखन पढ़ता है। बंशी बड़ा ही सीधा है। उसे दुनियादारी की समझ नहीं। दद्दा उसका विवाह पहले करना चाहता है, उसके लिए चाचा धन्नाराम की भतीजी छबीली को पसन्द किया जाता है, जो बहुत सुन्दर है। '

'भँवर' कहानी उस नारी की है, जो जीवनभर दूसरों पर न्यौछावर होती रही। जिसे सदैव अपनेपन के नाम पर केवल छला गया और वह जीवनभर तड़पती रही, अपनों के प्यार के लिए। भँवर कहानी की प्रमुख पात्र का नाम विरमा है। जिसके चारों ओर यह कहानी घूमती है। कहानी का प्रारम्भ विरमा की मनःस्थिति की दुविधा से होता है, वह गोबर थापते हुए, वह अपने पति के आने का इन्तजार करती है, फिर उसे याद आता है कि बिना किसी बात के उसके शराबी पति के द्वारा ससुराल में कैसे बेरहमी से पीटा जाता था।

'केतकी' कहानी की मुख्य पात्र केतकी बहुत ही गरीबी में जन्मी थी। वह बहुत ही साहसी सुन्दर कन्या थी। इसी कारण तो केतकी के पिता ने उसका विवाह एक विधुर से करने की कोशिश की, जिसका नाम पं० श्री गोपाल जी था और

पण्डित जी ने केतकी से विवाह बिना दहेज के अपने बड़े बेटे से किया था। केतकी बहुत ही साहसी नारी थी।

इस कहानी के अन्तर्गत महिला चिकित्सक के पास एक रोगिणी अपनी पुत्री और दामाद के साथ आयी, जिसे देखकर चिकित्सक को सरजू होने का सन्देह हुआ। कार्ड में सरजू का नाम लिखा देखकर चिकित्सक को विश्वास हो जाता है कि वह सरजू है और वो उसके साथ बिताये दिन याद करती है। जब वह झांसी में कॉलेज में अपने चचेरे भाई के साथ पढ़ रही थी। वो जिस किराये के मकान में रहते थे, तब सरजू ही उनके लिए खाना बनाती थी। वह बड़े ही मन से सारा काम करती थी, वह उसे पैसे भी देते पर वह लेने से इन्कार कर देती। सरजू का पति बड़ा ही बुरा था। उसका कई स्त्रियों के साथ नाजायज सम्बन्ध थे। जब वह जेल में बन्द हो गया था तब सरजू ही उसे जेल से रिहा कराकर लाई थी।

यह कहानी संग्रह की पहली कहानी है और यह 'वसुमति की चिट्टी' नाम से टेलिफिल्म के रूप में संप्रेषित किया गया। कुलीन और शिक्षित होने पर भी राजनीतिक क्षेत्र में किसी पद पर विराजित है तो भी नारी को आदमी का, कभी पति का, कभी पिता का गुलाम बनना पड़ता है। पति के बंधन को छोड़कर स्त्रियों के लिए कुछ करने का निश्चय इंसुरिया (दलित नारी) की प्रेरणा से वसुमति ने लिया, लेकिन असफल हो गई।

अब फूल नाहीं खिलते – मैत्रेयी जी के इस कहानी संग्रह में 'झरना' नाम की नारी का वर्णन किया गया है।

रिजक – मैत्रेयी जी की कहानी 'रिजक' लल्लन की है जो कितने भी परिवेश बदल जायें किन्तु अपना अंत रंग का परिवेश नहीं बदलने देती। 'डिलेवरी' की जो कला उसे प्राप्त है, उसका उपयोग वह ऐसे करती है जहाँ इंसानियत के सिवाय और कोई रिश्ता नहीं है।

पगला गई भगवती – यह कहानी बाल विवाह हुई भागवती उर्फ भागो की है। कहानी का प्रारम्भ भागो की बड़ी बहन के घर शादी से होता है। जब विवाह के लिए जिज्जी के घर को सजाया जाता है। तब भागो को याद आता है, भागो बाल विधवा अपने सारे भाई, बहनों में सबसे छोटी है। जिज्जी सबसे बड़ी है। भागो जिज्जी के घर रहती है। भागो को अपने विवाह के बारे में याद भी नहीं है।

मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'बोझ' में ऐसी कहानी का वर्णन किया है जहाँ स्त्री–पुरुष दोनों ही नौकरी करते हैं, जो अपने बच्चे का ठीक तरीके से लालन–पालन नहीं कर पाते हैं और बच्चा उनके प्रेम के लिए दुःखी होता रहता है और वह अपने करीब कर्तव्य को बोझ समझता है। तो बच्चा क्या करे, तब बच्चा क्या सोचता है, यह सब दिखाया गया है, बोझ कहानी के माध्यम से।

'छाँह' कहानी का प्रमुख पात्र विश्वनाथ है, जो पाँच गाँव के जमीदार रह चुके हैं। इनको लोग दद्दा कहते हैं, जो बहुत ही वृद्ध था। उनके तीन बच्चे थे। वह बहुत ही अच्छे थे और सभी की मदद करते थे और समय के साथ बच्चे बड़े हो गये थे। लड़कों की नौकरी शहर में लग गई तथा उन्होंने लड़की रेशम का विवाह भी कर दिया। विवाह के दो वर्ष बाद रेशम की मृत्यु हो गई और रेशम का पति दमा मरीज था, इस कारण दद्दा अपने दो नवासे को अपने साथ अपने घर ले आये।

तुम किसकी हो बिन्नी – मैत्रेयी जी ने इस कहानी में लड़कियों की दुर्दशा का वर्णन किया है तथा उनके साथ हो रहे अत्याचार को उजागर किया है। यह कहानी गर्भ में ही कन्या भ्रूण हत्या जैसी समस्याओं को लक्ष्य बनाकर लिखी गई है।

'सेंध' कहानी राजनीति पर आधारित है, इसमें स्व. जोशी बौहरे की पत्नि कलावती जो कई राजनीतिक पार्टी की सदस्य हैं। वह राजनीति को अच्छी तरह से जानती है। वह यहाँ से चुनाव लड़ना चाहती हैं, इसलिए तो विधायक के कहने पर वह गंगासिंह से मिलने आई है क्योंकि गंगासिंह स्व. जोशी बौहरे के मित्र हैं। उनकी जमीन के चले जाने पर वह शहर में मजदूरी कर रहे हैं। उन्हें अपनी जमीन की याद आती है। गंगासिंह कलावती को बैठाकर स्वयं चाय लेने गये हैं।

ललमनियाँ कहानी, ललमनियाँ नृत्य पर आधारित है। जो विवाह के अवसर पर होता है। इस कहानी की प्रमुख नायिका मौहरो है, जो विवाह के अवसर पर ललमनियाँ नृत्य करती है। जब साबो जीजा ताहरपुर में नम्बरदारिनी के बेटी के विवाह पर ललमनियाँ नाचने के लिए बुलाते हैं, तब वह अपनी पिछली जिन्दगी के बारे में सोचती है कि कितने गरीब परिवार से है। उसकी चार बहनें थीं, जो बहुत ही सुन्दर व होशियार थीं। मौहरो की माँ विवाह उत्सव में ललमनियाँ नृत्य किया

करती थीं, जिसके बदले उसे जो भी मिलता, उससे अपने परिवार का भरण–पोषण करती हैं।

शतरंज के खिलाड़ी – इस कहानी में चुनाव का क्षेत्र कैसे चुनौती पूर्ण होता है इसका वर्णन किया गया है क्योंकि इसमें सुशीला देवी के पति कमलो देवी के पति शतरंज के खिलाड़ी हैं। इस कहानी में अनेक पात्र हैं जो इस कहानी में संवाद करते हैं और कथानक को आगे बढ़ाते हैं। महिलाओं का चुनावी क्षेत्र में आने से लोगों के अंदर उत्सुकता के भाव हैं। राजनीति में क्यों कर फायदा होता है उसके लिए शतरंज की कौन–सी चाल चलनी चाहिए? यह सब बातें सुशीला देवी और कमलो देवी के पति करते हैं। समाज में स्त्री का आज तक का स्थान चार–दीवारी में सीमित था। आरक्षण के कारण महिलाएँ राजनीति में आने लगीं हैं। शुरु में ही उसे अखाड़े में उतरना योग्य नहीं है। सब सूत्र पतियों के हाथ में हैं।

राय प्रवीण –मैत्रयी जी की इस कहानी में एक अत्यधिक सुंदर महिला राय प्रवीण का वर्णन मिलता है। राय प्रवीण एक नृत्यांगना है। वेश्या कहा जाता है उसे। ऐसी विद्वान स्त्री है कि मुगल को भी विवाद में हरा दे। उसकी विद्वत्ता इसलिए है क्योंकि वह केशवदास कवि की भूमि में पली हुई बेटी है और अनायास ही उनकी भेंट अकबर बादशाह से होती है। बादशाह राय प्रवीण पर मुग्ध हो जाता है। राय प्रवीण राजा की प्रेमिका है। वह राजा को चिंता न करने के बारे में कहती है और दरबार में बादशाह से प्रश्न पूछती है कि क्या कोई दूसरों की झूठन खा सकता है? गोविंद गाइड जर्मन, फ्रेंच, इटालियन भाषा में इतिहास समझाता है। राजा इंद्रमणि सिंह की प्रेमिका राय प्रवीण के बारे में जानकारी देता है।

बिछुड़े हुए – यह एक पति–पत्नी की कहानी है। पति सुग्रीव पत्नी को छोड़कर, साधु बन जाता है। दम्पति जीवन व्यतीत करना चाहिए ऐसा शास्त्रों में लिखा है। विवाह करके परिवार से विमुख हो जाना उचित नहीं है। सुग्रीव यही बात करता है, उसे यह पता है कि उसके कारण घर के लोग परेशान होंगे, फिर भी वह साधूगिरी करता है। घर का सारा उत्तरदायित्व पत्नी सँभालती है। वास्तव में उसकी वह जिम्मेदारी है ही नहीं, कर्ता पुरुष की वह जिम्मेदारी है।

ताला खुला है पापा – मैत्रेयी जी की यह कहानी जगदीश चौबे की बेटी बिन्दो की है जो किसी लड़के के प्रेम में फंसी है। बिंदो अरविंद से प्यार करती है।

अरविंद निम्न जाति का लड़का है। वह यह नहीं मानता कि जात क्या है, बिरादरी क्या है? उसे चंदा बहुत पसंद है परंतु उसकी जाति बीच में आती है। लेखन की दृष्टि से भी इस प्रकार के विचार लेखकों ने व्यक्त किये हैं कि कट्टरता जो है वह महिलाओं के चरित्र पर निर्भर है। यहाँ बिंदों और अरविंद एक–दूसरे को चाहकर भी विवाह नहीं कर सकते हैं। बिंदो के ऊपर पाबंदियाँ लगाई जाती हैं। कहाँ जाती है? कहाँ आती है? किससे बोलती है? यह सब बातें बिंदो के ऊपर लगाई जाती हैं। अरविंद को वह चिट्ठियाँ लिखती है। माँ को यह सब पसंद इसलिए नहीं क्योंकि वह घर की मर्यादाओं को जानती है। एक दिन जानबूझकर पापा अपनी बेटी के व्यवहार को देखने के लिये ताला खुला ही रख देते हैं, जिसे देखकर बेटी बिंदो कहती है कि ताला खुला है पापा, पिता के प्रति बेटी की जिम्मेदारी की अनुभूति दर्शाती है यह कहानी।

साँप सीढ़ी–इस कथा में महिलाओं के अंतरंग का वर्णन किया है। ''सास–ससुर की सेवा दिलो–जिगर से करती है परंतु व्यवहार में जो बातें हैं उससे वह सजग है और पति से बातचीत करते समय अलग व्यवहार है और दिखावा अलग है।''[338]

उजदारी–यह कथा एक ऐसी नारी की है, जिसका सहारा जो है पति वह चला जाता है और संयुक्त परिवार में रहने वाली इस शांति को देवर एवं ससुर कहने को बहुत सारी बातें कहते हैं किंतु उसे अलग घर नहीं बनाने देते। स्त्रियाँ अवश्य ही यह अपने मन से निकाल दें कि वे पुरुषों की वासना के पात्र हैं। उनकी उन्नति पुरुषों की अपेक्षा उन्हीं के हाथों में हैं। .... स्त्री पुरुष की सहचरी है, उनमें पुरुष के समान हर प्रकार की बौद्धिक शक्ति होती है और पुरुष के हर छोटे से छोटे कार्य में भाग लेने का और उसी की भाँति स्वाधीनता का अधिकार है।

बारहवीं रात–यह कहानी दहेज प्रथा के खिलाफ आवाज उठाने वाली नवयुवती की कथा है। यानि कुछ नहीं। जब लड़की घर से आती है तो अपने सारे सम्पर्कों और संबंधों को वहीं छोड़ आती है, उनमें बहुत–से अच्छे होते हैं, बहुत–से

---

338 पुष्पा मैत्रेयी – गोमा हंसती है, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998 पृ0सं0 35

बुरे भी, बहुत–से आवश्यक होते हैं, बहुत–से मधुर होते हैं, लेकिन उनमें से वह कुछ को भूल जाती है, कुछ को वह भुला देती है।

गोमा हँसती है – यह कहानी किग्ड़ा और गोमा की है। दाम्पत्य जीवन में पत्नी का एवं पति का प्यार ही मन में उत्साह, उमंग निर्माण करता है और उससे घर–गृहस्थी व्यवस्थित चलती है। नारी के विभिन्न अर्थों के बारे में चर्चा की गई है। उसके अनेक रूप हैं।

5.1 वैयक्तिक एवं पारिवारिक समस्याएँ

जब भी हम लड़कियों के दुःख की बात करते है तो अक्सर लोग कहते हैं, कि न जाने क्या उन्हें ससुराल में सहना पड़े, परन्तु यहाँ यह बताना जरूरी है कि लड़कियाँ ससुराल में तो बाद में जाती है पहला अन्याय तो उसके साथ उसी समय शुरू हो जाता है जब वह जन्म लेती है और खुशी की जगह आंसू बहाए जाते हैं। लोगों का मानना है कि लड़कियाँ देवी का रूप होती हैं और शास्त्रों में लिखा है–''यत्र नारीयस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता :। जिस हिसाब से पिछले दिनों में गर्भ में लड़कियों को मारा गया है। उस हिसाब से तो उन घरों से देवताओं को कूच कर जाना चाहिए।''[339] इस समस्या को ध्यान केन्द्रित करती हुई मैत्रेयी पुष्पा की कहानी तुम किसकी हो बिन्नी' ? बिन्नी की माँ आरती को भी पुत्र जन्म से लगाव है। पढ़ी–लिखी, शहरी वातावरण में जीवन व्यतीत करने वाली आधुनिक स्त्री आरती, वैचारिक स्तर पर परंपरागत ही है।

इसका चित्रण लेखिका ने बिन्नी और बुआ के संवाद के द्वारा प्रस्तुत किया है। बिन्नी की समझ में बुआ की बात नहीं आई, ''क्या हुआ बुआ ? ''पेट में ही मार डाला तेरी बहन को, और क्या हुआ। एक बार नहीं, दूसरी बार, तीसरी बार, तेरी बहनें......''[340] विज्ञान और तकनीकी विकास ने लड़कियों के सामने और एक संकट उत्पन्न किया है और वह संकट है भ्रूण हत्या।

मैत्रेयी पुष्पा ने जो कुछ लिखा अपने अनुभवों से लिखा। अनुभवों से विचार बने इसलिए वे पहचाने गए। उन्हें जिन कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा,

---

339 क्षमा शर्मा –स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृ0सं0 46

340 मैत्रेयी पुष्पा–ललमनियाँ (तुम किसकी हो बिन्नी ?), पृ0सं0 122

उसे साहित्य के माध्यम से पाठकों के सामने रखा। वह अपने साहित्य के माध्यम से मौजूदों मान मर्यादाओं अर्थात नैतिकता की सीमाओं को तोड़ना चाहती हैं। अपने लेखन के बारे में उन्होंने खुद 'सुनों मालिक सुनो' में लक्ष्मण रेखा की चुनौतियों में कहा है– "अश्लीलता की रक्षा के लिए मैं जिंदगी को तबाह कर दूँ, ऐसा दबाव मानने से इन्कार करती हूँ।"[341]

5.2 सामाजिक समस्याएँ

विवाह स्त्री को उसकी देह एवं श्रम के बदले जीवन भर के लिए रोटी, कपड़ा और छत मुहैया कराता है और देता है बाहरी पुरूष से सुरक्षा का आश्वासन, बदले में लेता है उसका 'आत्म'। यह 'आत्म' या वैयक्तिक स्वतन्त्रता को बचपन से ही छीन लिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप स्त्री शिक्षित एवं कई बार स्वावलंबी होकर भी पति, पुत्र या घर के अन्य पुरूषों की सत्ता के आधीन रहती हैं सुरक्षा एवं सम्मान के बदलते में व्यक्तिगत जीवन जीने का दुस्साहस नहीं कर पाती। परिवार से मिलने वाली सुरक्षा की मोहताजी का महत्वूपर्ण कारक है, उसका नाकमाऊ समझा जाना। यही वजह है कि जिसके (पुरूष) पास अर्थ है, शक्ति के स्रोत भी उसी के पास केन्द्रित हो जाते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में विवाहित स्त्रियों की इसी दशा को चित्रित किया है। घरेलू श्रम में स्त्री अपनी जिंदगी खत्म कर देती है, जिसका न कोई मूल्य दिया जाता है, न आँका जाता है। औरत का दिन–रात खटना बेगारखाने में जाता है और वह भुलाये रहती है अपने को मोह–ममता में। विवाहित स्त्री की आर्थिक पराधीनता की स्थिति को स्पष्ट करते हुए रेखा कस्तवार कहती है:

"यह आर्थिक परावलंबन स्त्री को 'याचक' की मुद्रा देता है और पुरूष को 'दाता' की। अपने प्रत्येक निर्णय के लिए वह पुरूष की ओर देखने को विवश हो जाती है। आर्थिक परवलंबन आत्म विश्वास पनपने नहीं देता, मानसिक विकास के अवरूद्ध हो जाते हैं। स्त्री के हिस्से जहाँ नितांत परवशता आती है, वहीं पुरूष के हक में स्वछन्द आत्म निर्भरता।

341 मैत्रेयी पुष्पा– 'सुनो मालिक सुनो', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006 पृ0 9

विवाहित स्त्रियों की आर्थिक परनिर्भरता को सामने लाती है– मंसाराम की पत्नी आनन्दी। आर्थिक रूप से पुरूष पर आश्रित होने के कारण वह चाहकर भी पति को नहीं छोड़ पाती। यहीं आकर वह कबूतरा स्त्रियों की निजता और दृढ़ संकल्प के आगे बौनी रह जाती है। मंसाराम जब स्थाई रूप से कबूतरा बस्ती में रहने लगता है तो उसे अपने अधिकारों की नहीं वरन संपत्ति की चिंता होती है कि कहीं मंसाराम, कदमबाई के बेटे राणा को ही संपत्ति न देदे।

संपत्ति पर स्त्रियों का कहीं भी कोई अधिकार नहीं होता है– इस प्रश्न को अपनी औपन्यासिक कृतियों में कई प्रसंगों में उठाया है। इस संदर्भ में कस्तूरी का यह कथन दृष्टव्य है:

विवाह–संस्कार में हम अपना सर्वस्व होम कर देते हैं। जो आदमी भारी रकम ऐंठे बिना तुम्हें अपने परिवार की सदस्य नहीं बनाना चाहता है, वह तुम्हें अपनी घरवाली तो क्या ही मानेगा? हमारे कुटुम्बों का ऐसा ही विधान है कि लड़की के माता–पिता को लूटकर भी उसे सम्पत्ति में शामिल नहीं करते।

हमारे पुरूष प्रधान समाज के अनुरूप स्त्रियों को ऐसी कोई अर्थिक सुरक्षा नहीं दी जाती, सिसे पति के बिना भी वह सदैव सुरक्षित रहता है। पति उसे नौकरी नहीं चाहेगा तो वह नौकरी नहीं कर सकती। यही पति जब चाहे दूसरा विवाह कर ले या जब चाहे पत्नी को तलाक देदे। ऐसी स्थिति में जीवन भी पति और बच्चों की सेवा करने वाली स्त्री को उसके श्रम का क्यों भुगतान क्यों नहीं करता? पति–पत्नी जोड़े गये धन का बटवारा क्यों नहीं होता? और जीवन सागिनी कहलाने वाली संपत्ति में बराबर की हकदार क्यों नहीं होती? ऐसे ही कुछ आर्थिक सवालों को उठाकर उपन्यासकार ने पाठकों को सोचने पर विवश कर दिया है। मार्गरेट बेन्सटेन अपने एक लेख 'स्त्री मुक्ति का राजनीतिक अर्थशास्त्र' में इसी स्थिति का उल्लेख किया है।[342]

एक ऐसे समाज में जहाँ मुद्रा मूल्य का निर्धारण करती है स्त्री ऐसी कोटि है जो मुद्रा अर्थशास्त्र की परिधि के बाहर काम करती हैं उसके कामों को मुद्रा से नहीं आँका जाता। अतः वह मूलयहीन होता है, यहाँ तक कि वह वास्तविक काम भी नहीं

342 मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ (तुम किसकी हो बिन्नी ?), पृ0सं0 122

माना जाता। और ऐसे मूल्यहीन काम को अंजाम देने वाली खुद औरतों की हैसियत को उन पुरूषों के समकक्ष मानने की बात सोची ही नहीं जा सकती, जो मुद्रा के बदले में काम करते है।।

इसी आर्थिक असुरक्षा के कारण कलावती चाची मैत्रेयी को समझाते हुए कहती हैः "बेटी, वहाँ खेत–खलिहान नहीं कि तू मेहनत करके बराबरी का दावा करे। पौहे–मवेशी भी नहीं कि दूध बूँद में से चार पइसा निकालकर अपने खीसा में धरे। चार फुलकियाँ चूल्हे पर सेंकने वाली और 'नल' से पानी निकालने वाली और पक्के आँगन को झाडू से बुहारने वाली का कोई गिनेगा? सो लाली, अपनी चीज वस्त (जेवर) अपने कब्जें में रखना। जेवर लुगाई का धन होता है.... और सोच लेना कि इसके बाद तेरे हाथ में कुछ आना नहीं। ब्याह–गौने ही आदमी जोरू की जवान मानकर कुरबान रहता है।"[343]

जेवर धन भी स्त्रियों के हाथ कब रहता है, पुरूष जब चाहता है तब छीन लेता है। आखिर में उनके हाथ कुछ नहीं आता। मैत्रेयी सोचती हैः "ब्राह्मणों के घर की व्यवस्था क्या होती है? गहने जेवर मर्दों के कब्जें में चले जाते हैं, औरतों के हाथ तुलसी की कंठी रह जाती है। रसोई की छूत–पाक और ठाकुर जी की पूजा–पाठ ही उनकी पूँजी है।[344]

5.3 आर्थिक समस्याएँ

विवाह से पूर्व लड़कियों के संरक्षक पिता और भाई होते हैं। आर्थिक रूप से उन्हें के आधीन होती हैं। उन्हीं के आदेशों को पालन करना होता है। यदि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना भी चाहें तो परिवार के पुरूष सदस्य उसका विरोध करते हैं। उनकी मर्जी के बगैर कोई निर्णय नहीं सकती। पिता की सम्पत्ति पर उसका कोई हक न होने के बावजूद भी उसे परिवार के सदस्य आत्मनिर्भर वे क्यों नहीं सोचते कि क्यों बनने देते? वे क्यों नहीं सोचते कि अस्थाई रूप से मिलने वाली आर्थिक सहायता के सहारे कोई अपना जीवन कैसे काट सकता है। आर्थिक परनिर्भरता के कारण ही वे सदैव दूसरों की मोहताज रहती हैं, कन्या होने के

343 मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ (तुम किसकी हो बिन्नी ?), 166
344 मैत्रेयी पुष्पा – वहीं, पृ0सं0 122

अपमान को झेलती हैं। आर्थिक रूप से परनिर्भर होने के कारण ही वह परिवार पर बोझ बनी रहती हैं। एक स्थल पर उर्वशी कहती है:

"भगवान काहे के लाने बिटिया को जन्म देता है? वह नहीं जानत कि लड़की पैदा होके कितों को विपदा में डार देगी। देख रही मीरा तुम..... हम न होते तो इत्ती कलेस मचती?"[345]

आर्थिक आत्म–निर्भरता के अभाव के कारण के कारण ही उसके विवाह में उसकी मर्जी को शामिल नहीं किया जाता है। क्यों, आखिर क्यों वह जन्म से ही पुरूष सत्ता के शिकंजे में जकड़ी रहती है। यह कैसा इंसाफ है।

मैत्रेयी पुष्पा ऐसे ही कुछ आर्थिक सवालों से उलझती दिखाई देती हैं। पिता की संपत्ति में पुत्री की बराबर की भागीरादी को आवश्यक मानती हैं। जिसे उनका आर्थिक पक्ष मजबूत हो। स्त्री का अपने घर, अपनी जन्मभूति को छोड़कर दूसरे घर में जाना उसके जीवन की बड़ी त्रासदी है। वे सवाल करती है कि जिस घर में उसने जन्म लिया, जिन माता–पिता ने उसका पालन–पोषण किया उनकी सम्पत्ति पर व्यावहारिक रूप से उसका कोई हक क्यों नहीं है।

5.4 शैक्षणिक समस्याएँ

मैत्रेयी पुष्पा ने शिक्षा की समस्या को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। इस समस्या को मैत्रेयी पुष्पा की 'बेटी' कहानी में देखा जा सकता है। लेखिका ने बड़े ही मार्मिक ढंग से बेटा–बेटी को लेकर किए जाने वाले अन्याय का चित्रण किया है। 'मुन्नी' के माता–पिता पांच बेटों की पढ़ाई का खर्चा तो आराम से उठा सकते हैं लेकिन मुन्नी को पढ़ाने के लिए उनके घर में अकाल पड़ा है। मुन्नी इस बात से अनभिज्ञ नहीं है इसलिए विरोध करती है, लेकिन मां उसे दो वाक्यों में ही चुप करा देती है। यथा "चुप होती है कि नहीं ? बहुत जबान चल गई है तेरी। तू लड़कों की बराबरी करती है। बेटे तो बुढ़ापे की लाठी हैं हमारी, हमें सहारा देंगे। तू पराए घर का दलिदर तेरी कमाई नहीं खानी हमें ..... कह दिया कान खोलकर सुन ले।"[346] बेटी को शिक्षा से वंचित रखकर उसके बौद्धिक विकास का भी हनन कर देते हैं।

---

345 मैत्रेयी पुष्पा – ललमनियाँ, पृ0सं0 58

346 मैत्रेयी पुष्पा : चिन्हार, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, 1991, पृ0सं0 21

'अब फूल नहीं खिलते' इस कहानी में भी महाविद्यालयी नारी की शिक्षा संबंधी समस्या को वर्णित किया गया है। अपराध यदि कोई करता है तो उसकी सजा मिल ही जाती है। बाहर का व्यक्ति गुनाह करता है तो ठीक पर जब खेत ही फसल खा रहा है तो मुश्किल कार्य हो जाता है।

गली में तमाशबीनों की संख्या अधिक थी, ग्राहक की कम आए। ज्यादातर लोग मन बहलाव करने, आवाजें कसने के लिए थे। रंडियाँ एक–एक ग्राहक से जैसे जूझ रही थी, इस सारी बेपर्दगी और झुंझलाहट के बावजूद उनकी आँखे संभावित आँखों को खोजती रही, कोई नजर आता तो झट से लगता जैसे ग्राहकों से भी अधिक ये वासना में अधीर हुई जा रही है। ग्राहक उपेक्षा से आगे बढ़ जाता तो उनके चेहरे पर से मुखौटा उतर जाता, चेहरे पर तृष्णा, थकान उभर आती, आँखों की चमक बुझ जाती, होंठ सिकुड़ जाते और रंडी मुँह से पान की पीक थूक देती।'

मेरे विचार से तो जो अपनी भावनाओं को जबरदस्ती कुचल डालता है, वह इंसान कहलाने योग्य नहीं है। जीवन के आनंद का गला घोंटना, इंसानियत का गला घोंटने के समान है।'

यह कथा झरना की है जो विश्वास के साथ महाविद्यालय में जाती है। उसके कापी पर गुप्ता सर अश्लील चित्र बनाते हैं तो उसे बहुत गुस्सा आता है। प्रिसिंपल के यहाँ जाती है तो वह भी गुप्ता को इस लहजे से समझता है कि जैसे वह भी उस प्रक्रिया में शामिल हो। प्रधानाचार्य ने कहा–''रूक जाओं, आज क्या हो जायेगा ?' 'सर, माँ चिंता करेगी, रात में नही रूक सकूँगी।''[347]

श्री को वह प्रिसिंपल द्वारा हुए अत्याचार के बारे में बता देती है। ''अकेली ही विष पीने का संकल्प ले बैठी हूँ। इतना बड़ा हादसा कभी–कभी नन्हा मन असहय बोझ तले दबकर चीखने लगता है, पर प्रौढ़ परिपक्व स्त्री की तरह दब जाती हूँ, छोटी नहीं रही अब। उस दिन, उस पल ही बड़ी हो गयी बहुत बड़ी। अपनी उम्र से दूनी–तिगुनी। संसार के सत्–असत् का भेद खुल गया मेरे समक्ष।''[348]

इस कहानी में पुरूष की स्त्री की ओर देखने की जो दृष्टि है वह चाहे

---

347 मैत्रेयी पुष्पा–ललमनियाँ–अब फूल नहीं खिलते, पृ0सं0 59

348 मैत्रेयी पुष्पा–ललमनियाँ–अब फूल नहीं खिलते, पृ0सं0 59

कितना भी शिक्षित हो नहीं बदलती। असहाय विधवा नारी के बेटी का यौन शोषण है। इन सब के अलावा भी शिक्षा के प्रति जागरूकता का भी प्रयास देखने को मिलता है। 'बहेलिये' कहानी की नायिका 'गिरिजा' भी शिक्षा के महत्व से परिचित है। पिता की मृत्यु के बाद चाचा उन्हें शिक्षा से वंचित रखता है। बचपन में ही उसे शिक्षा के प्रति लगाव था। पति की मृत्यु के बाद सारी स्थिति बदल गई। वह सचेत होती है और पढ़ने की ओर रूख कर लेती है। लेखिका ने उसका चित्रण इस प्रकार किया है "गिरिजा अचानक बड़ी हो गई। सारा भार जहाँ कँधे पर बैल के जुए सा आ टिका तो परिपक्वता बुद्धि में स्वयं ही समाती चली गई। उस दिन गिरिजा ने फिर पीछे छूटी पुस्तक हाथ में पकड़ ली। वे पढ़ने लगी शिक्षा और जागरूकता की बातें करने लगी, स्त्री शोषण के विरूद्ध आवाज दे उठी। रात भर सभाएँ करती रात्रि पाठशाला में ग्रामीण बहनों, को जोड़ लेती उनकी पुकार सुनकर कुछ बड़े लोग बड़े प्रभावित हुए पर चिरस्थायी मुखिया गाँव के जाने–माने नामधारी नेता मन–ही–मन दहलने लगे अपनी हस्ती के प्रति अनजाने ही सशंकित।"[349] गिरिजा शिक्षा का दामन पकड़े स्वयं तो जागरूक होती ही है। अपनी शिक्षा का प्रयोग जनकल्याण के लिए भी करती है। वह उन स्त्रियों को भी जागरूक करती है जो स्वयं उनकी तरह ही शोषण की शिकार हैं। मुन्नी और गिरिजा शिक्षा के महत्व को समझती है। ये दोनों पात्र स्त्री पात्र आधुनिक स्त्री की छवि हैं।

5.5 यौन शोषण की समस्याएँ

विवाह संस्था का संबंध एक विशेष सामाजिक मान्यता है जो साधारणतया कानूनी अथवा धार्मिक संस्कार के रूप में होती है और दो विषय लिंग के व्यक्तियों के यौन संबंधों को स्थापित करने और उनके संबंधित सामाजिक तथा आर्थिक संबंधों का उन्हें अधिकार देती है। दाम्पत्य जीवन व्यतीत करना चाहिए ऐसा शास्त्रों में लिखा है। विवाह करके परिवार से विमुख हो जाना उचित नहीं है। सुग्रीव यही बात करता है उसे यह पता है कि उसके कारण घर के लोग परेशान होंगे फिर भी वह साधूगिरि करता है। घर का सारा उत्तरदायित्व पत्नी सँभालती है। युवक शंकर सुग्रीव का दोस्त है। उसे समझाता है और घर चलाने के लिए मनाता है। आधे में

349 मैत्रेयी पुष्पा–ललमनियाँ–अब फूल नहीं खिलते, पृ0सं0 63

गृहस्थी छोड़ी है। एक बेटी है मगना। मगना विवाह योग्य हुई है। सुग्रीव अपनी बेटी से मिलना चाहता है। परन्तु जब वह मगना से मिलता है बातचीत कर रहा होता है तो पत्नी चन्दा आती है। और मगना को वहाँ से ले जाती है। चन्दा को ये सब बातें पसंद नही है। वह उसे यह कह कर ले जाती है कि–'चल घर बहुत काम फैला हैं...उसे पता है कि लोग इस प्रकार का मजाक करते हैं और इन बातों से वह बहुत परिचित हो गई है।

धर्म से अनेक बातें जुड़ी हैं। जो मानता है उसके लिए धर्म है, जो नहीं मानता है उसे कोई कुछ नहीं कह रहा। सुग्रीव को ना कोई दंड देता है ना कोई कुछ कहता है। चन्दा ही है जो घर को धरपन दे रही है।

'सहचर' कहानी यह कथा है एक दम्पत्ति की। पति पत्नी जीवन भर एक दूसरे का साथ देते हैं तो ठीक है नहीं तो जिन्दगी अस्त व्यस्त हो जाती है। जीवन में संकटों की कमी नहीं होती है। कभी भी कुछ भी हो सकता है।

छवेली बंसी भैया की पत्नी है। सुशिक्षित, अच्छे घराने से है। ब्याह कर आयी उस समय अच्छा स्वागत हुआ। कुछ दिनों बाद उसे गॅग्रीन हो जाता है। पैर काटने तक की नौबत आती है। बंशी भैया परेशान हैं। खाना–पीना छोड़ दिया है। 'सहचर' के दुःख की वेदना मन में है। 'विभिन्न समयों पर विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार के परिवार समूह रहे है लेकिन बाहुल्य पितृसत्तात्मक परिवार रहा है।'

पहले जब धरती विकास की प्रतिक्रिया से गुजर रही थी सभ्यता स्त्री सत्तात्मक थी। कालांतर में नारी सत्ता पुरूष सत्ता में तब्दील हो गयी और आज स्त्री होने की हीन भावना का मिथ नारी को यह नही सोचने देता है कि कभी उनकी सत्ता प्रधान थी, वह घर की संचालिका थी, स्वामिनी थी और पुरूष उसका सेवक था जिसका फर्ज था गृहसंचालक का सामान मुहैया कराना।कालांतर में यही सेवक शासक बन गया। उपर्युक्त सन्दर्भ से नारी का परिवार में महत्वपूर्ण स्थान था। जब वह रोगिनी बन जाती है तो ससुर बेटे की दूसरी शादी कर देना चाहते है। इसके लिए वे एक डाकू की लड़की पसंद इसलिए करते हैं कि वह सारा दहेज देता है। शादी के दिन बंसी भैया गायब हो जाते हैं वह आरसी लेकर जो उन्हें नानी ने दी थी शादी के वक्त। डाकू के लोग दुल्हा दिखाने को कहते हैं तो बंसी के पिता की बहुत फजीहत हो जाती है। डाकू विक्रमसिंह का सामना दद्दा को करना पड़ता है।

आरसी को सुनार को बेचकर बंसी भैय्या गॅग्रीन का इलाज करते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में बाल–विवाह समस्या पर भी समाज का ध्यान आकर्षिक किया है। कम उम्र में लड़कियों की शादी कर देना एक तरह से उनके प्रति किया गया अन्याय है। 'इदन्नम्म' उपन्यास में एक स्थल पर विवाह का प्रसंग आया है। रात को बहू जिस कोठे से मुँह–दिखाई के लिए बिठाई थी, नींद की मारी वहीं लुढ़क गयी। मीरा ने आकर देखा तो अबोध बालिका–सी सो रही थी। 'औरतों ने एक–दूसरे के कान में कहा–''जे विदा लायक हती, सो बाप ने विदा कर दई। अबैन भेजते। चलाये गौने में भेज देते। अबै आकी उमर ही का है?''[350]

5.6 दहेज समस्या/बेमेल विवाह

शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं मानवी विकास के तमाम नारों के बावजूद प्रचलित भ्रष्ट समाज–व्यवस्था में आज भी दहेज–प्रथा रूढ़ नजर आती है। दहेज प्रथा का विकृत रूप उनकी 'बारहवी रात' तथा 'सहचार' कहानी में बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत हुआ है। 'बारहवी रात' कहानी में सीता की सास, सीता के साथ अमानवीय व्यवहार करती है क्योंकि सीता के पिता पूरा दहेज नहीं दे पाते है। सीता की सास पढ़ी–लिखी बहू से दिन–रात ठोर की तरह काम लेती है। उसकी मानसिकता का चित्रण इस रूप में आया है। ''........... पर हमें तो देखो कि नेठम ही अनी गांठ से ... . मायके से तुम्हारी पढ़ी–लिखी मैम बहू कानों में ऐसी बाली लटकाए आई थी, जैसे आठ–नौ साल की लरका–बिटिया पहने। अब इतेक तो तुम्हें भी समझ होगी कि गरीब से गरीब मां–बाप बिटिया के नाक–कान ले लाने ढंग की चीज–वसत बनवा देते हैं।''[351]

'सहचर' (चिन्हार) कहानी में बंसी के माता–पिता, बहू के अपंग बन जाने पर धन के लोभ में बंसी का दूसरा विवाह कर देना चाहते हैं। दहेज के बारे में क्षमा शर्मा के विचार हैं कि ''समाज में जितना काला धन बढ़ा है, दहेज भी उतना ही बड़ा है। दहेज देने के लिए पिताओं को कर्ज लेना पड़ता है, जमीन–जायदाद गिरवी रखनी पड़ती है। जब कि लड़के वाले लड़के को पालने और शिक्षा पर हुए

---

350 मैत्रेयी पुष्पा – इदन्नम्म, राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 1994 पृ0सं0 87
351 मैत्रेयी पुष्पा – गोमा हंसती है, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998 पृ0सं0 65

खर्च का हवाला देते पाए गए। अधिक शिक्षित लड़की यानि अधिक दहेज।''[352] बस यही स्थिति मैत्रेयी पुष्पा की 'प्रेम भाई एण्ड पार्टी' तथा 'साप–सीढ़ी' कहानी में देखने को मिलती है।

5.7 विधवा एवं परित्यवता समस्या

मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ा त्याग और सबसे बड़ी विजय है। माँ बच्चों के भविष्य के प्रति सदा से ही सावधान है। लेकिन आज की पीढ़ी के लिए अपनी माँ की भावना तथा त्याग का कोई मोल नहीं है। अपने स्वार्थ के कारण आत्मीयजनों के साथ अमानवीय व्यवहार करने से भी नहीं हिचकिचाते हैं। इसलिए आपसी रिश्ते टूट रहे है। बेटे माँ के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं। इस समस्या को मैत्रेयी पुष्पा ने 'अपना–अपना आकाश' कहानी में चित्रित किया है। विधवा कैलाशों देवी ने अपने छोटे देवर लखिया की मदद से तीन–तीन बेटों को पढ़ाया लिखाया और काबिल बनाया। कैलाशो देवी के तीनों बेटे स्वार्थ में अंधे होकर पिता स्वरूप लखिया चाचा को, अशिक्षा का फायदा उठाकर उसे बंजर जमीन थमाते हैं। माँ के हिस्से जमीन हड़पने के लिए ममता का वास्ता देकर उसे जाने की कोशिश करते है। माँ ने जब इन्कार किया तो वे बर्दाश्त नहीं कर पाए।

लखिया जब भाभी को रोकने की कोशिश करने लगा तो बड़ा बेटा गाली–गलोच करने लगा, ''चाचा होगा अपने घर का, जिंदगी भर तो माँ को फुसलाए रहा, चलाता रहा बदनामियों का काँटों में।''[353] इस तरह माँ का चरित्र दागदार करते हैं। पुरूष चाहे कोई भी हो पिता, पति या बेटा वह स्त्री पर लांछन रूपी ब्रम्हास्त्र छोड़कर ही काबू में करता हैं। परन्तु कहानी के अन्तिम चरण में जब अपने ही बेटों ने वनवास देना चाहा, तो पुरानी आत्मनिर्भरता उठ खड़ी होती है और सभ्य तथा चतुर बेटों क मुँह पर करारा थप्पड़ मार कर वो चुपचाप गाँव चली जाती है।

दूसरे मुख्य चरित्र के रूप में लखिया और 'बिन्दों' सामने आते हैं जिन्होंने भाभी के बेटों को पाल–पोस कर बड़ा आदमी बनाया। माँ की वेदना इन शब्दों में

---

352 मैत्रेयी पुष्पा – चिन्हार, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली, 1991 पृ0सं0 166

353 मैत्रेयी पुष्पा : चिन्हार (अपना–अपना आकाश), आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0सं0 15

उफन जाती हैं–''नौ महीने गर्भ में रखा उन्होंने, पाल–पोस कर खड़ा कर दिया बिन्दो ने और खून–पसीने से सीचता रहा लखिया।''[354] उन्हीं बेटो के विश्वासघात करने पर भी लखिया कुछ कहता नहीं, अपितु भाभी के प्रति वही आदर रखता रहा। बेटे के जन्मोत्सव पर भाभी का इंतजार करता रहा। ये स्वार्थ रहित प्रेम उन पर हमेशा छाया रहा।

बेटे के घर रहते हुए वे अनायास ही उस प्रेम–आदर की स्मृतियों से सराबोर हो उठती है–''यहाँ बिन्दों नहीं रहती थी, जो थाली परोसे उनकी प्रतीक्षा में सूखती रहे .... और न लखिया था, जो भाभी की गाँठ में बँधा इर्द–गिर्द चकफेरा खाता रहे।''[355] और यही निःस्वार्थ प्रेम और आदर ही उन्हें वह शक्ति देता हैं कि वह उसी मिट्टी में वापस चली जाती है। यह वापसी लखिया और बिन्दो के भावनाओं की जीत है। बेटे और बहू उन तथा कथिक सभ्य मानव के प्रतीक हैं, जो अपने फायदे के लिये देवी स्वरूप माँ का भी

बँटवारा कर सकते हैं। चाचा–चाची के प्यार का प्रत्युत्तर वे धोखे और नफरत के रूप में देते हैं, यहाँ तक कि माँ से काम निकल जाने पर उसे भी पहले बाँटते है, फिर वनवास दे देते हैं। इसी कहानी का उद्देश्य अनंत आकाश की तरह ही निर्मल पावन है।

5.8 सार्वजनिक जीवन में बढ़ते भ्रष्टाचार की समस्या

वर्तमान भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति न केवल वर्ग में बँटींहै बल्कि वह कई–कई जात–पात, आर्थिक श्रेणियों और श्रमिक रूपों में विभक्त है। प्रसंगानुकूल राजेन्द्र यादव के अनुसार जिस तरह बंगाल के आदिवासियों की जंगल कथाएँ लेकर महाश्वेता देवी ने लगभग तहलका मचा दिया था। ''..............छोटे रूप में यही स्थिति मैत्रेयी पुष्पा के कथा लेखन की है। निश्चित ही मैत्रेयी के लेखन में बौद्धिक तेज, राजनैतिक आक्रामकता और न्याय संघर्ष की अति परिचित पक्षधर घोषणा नहीं है, महानगरों से हटकर खेत–खलिहानों में निरन्तर चलने वाली लड़ाइयाँ और उनके बीच जागरूक होती नारी के अघोषित विद्रोह की कहानियाँ, हिन्दी के जनाने लेखन

---

354 चिन्हार (अपना–अपना आकाश), आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0सं0 35

355 मैत्रेयी पुष्पा –चिन्हार, आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0सं0 17

और स्त्री के बौद्धिक विमर्शो के बीच उसी तरह ताजगी देती हैं जैसी कभी रेणु ने दी थी। जैसा कि मैंने कहा, वे नारी चेतना के व्यक्तित्व निर्माण की नही, सामंती अमानवीयताओं और उभरती लोकतांत्रिक स्थितियों के बीच सहज नारी आकांक्षाओं की ऐसी कहानियाँ हैं जहाँ संघर्ष और 'विद्रोह' शब्द बाहर से थोपे हुए, लगते हैं क्योंकि वहाँ वे सिर्फ जीने की जिद और दी गई नियति के अस्वीकार की संकल्प–कथाओं का रूप लेती हैं।.......सेक्स, बलात्कार भी वहाँ उसी जीवन प्रणाली का हिस्सा होकर आता है। वे नारी के अपने अस्तित्व से अस्मिता तक पहुँचने वाली कहानियाँ हैं............. बेबाक और बेलाग।''[356]

इन कहानियों में जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण मिल जाता है। इनकी प्रत्येक कहानियों में मानवीय संवेदनाओं की जीवंतता का जो अद्भूत संसार रचा है वह हिन्दी साहित्य में चौंकानेवाला वाला साबित हुआ। वह जीवनानुभवों को झेलती, उस पर मान करती हुई, कठिनाईयों को चीरती हुई, प्रगति की ओर खुद को ले जाने वाली नारी मैत्रेयी की कहानी की मुख्य पात्र नारी है। इस कथा–पात्रों से नारी जगत् को न केवल प्रेरणा मिली बल्कि एक जीवन जीने की कला से भी परिचय हो जाता है। कहानी संग्रहों की प्रत्येक कहानी का अपना स्वतंत्र महत्व है।

5.9 ग्रामीण एवं महानगरी जीवन की समस्याएँ

मैत्रेयी का सामाजिक परिवेश ऊंचे–नीचे, जात–पांत, भेद–अस्पृश्यता और आर्थिक विडंबनाओं से ग्रस्त रहा है। उनका कथा साहित्य मुख्यतः ग्रामीण जन–जीवन की विवशता और पस्त हिम्मत को बतलाता है। पर साथ ही साथ स्त्री वर्ग की पराधीनता और पशुवत दीन–हीन स्थिति को भी दर्शाता है। कहा जाता है, व्यक्ति और समाज एक–दूसरे पर आश्रित है। स्वतंत्रता के पश्चात् समाज की स्थिति में कोई सुखद बदलाव नहीं हुआ। अशिक्षा, गरीबी, बेकारी, अनुशासनहीनता आदि समस्याएँ सामाजिक चेतना को निरंतर प्रभावित कर रही थी। देश का बंटवारा, सांप्रदायिक भेदभाव, जातीय दंगे, स्त्री शोषण, भ्रष्टाचार आदि से मानवीय मूल्यों का हास होने लगा था तथा सामाजिक मूल्यों का महत्व घटता गया।

कहा जाता है कि शिशु जिस परिवार में जन्म लेता है, शैशव और बाल्यकाल

---

356 हंस पत्रिका, राजेन्द्र यादव जुलाई, 1998

व्यतीत करता है, वहीं उसकी प्रतिछवि अवचेतना में अंकित हो जाती है और बड़े होने पर वही उसके चरित्र निर्माण की पूंजी बनती है। ''जबकि हम सब जानते हैं कि मैत्रेयी के लेखकीय व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से खिल्ली गाँव ही उनके अनुभवों का 'देश–परदेश' है, वही उनकी प्रज्ञा पली–बढ़ी और विकसित हुई। सदियों के परतदार और जटिल इतिहास ओर उसे अपनी बहुरंगत में जीते जिस लोक ने उन्हें जिन नग्न वास्तविकताओं का अनुभव और यथार्थ बोध कराया है उसी लोक जीवन ने उन्हें इस आक्रामक दृष्टि से लैस भी किया जिसे जिजीविषा का यथार्थ कहते है।''[357]

5.10 जातिगत एवं वर्गगत समस्याएँ

'बहेलिये' कहानी में गिरिजा के माध्यम से समाज के दुर्दान्त बहेलियों, यानि सभ्यता के आवरण में छिपे हुये बर्बरता की कहानी का खुलासा किया है। कहानी की मुख्य पात्र गिरिजा, जिसका बचपन और जवानी अबला नारी की परिभाषा थी। पति की मृत्यु के बाद गिरिजा बदल कर एक सशक्त नारी बन गयी। इतनी कि ''गाँव के जाने–माने नामधारी नेता मन नहीं मन दहलने लगे अपनी हस्ती के प्रति अनजाने ही सशंकित। उसी बीच गाँव की भोली सी अस्मिता की लूट और फिर उसके जलने की घटना ने गिरिजा को हिला कर रख दिया। पर पुलिस का आना भी खानापूर्ति रह गया क्योंकि सुमेर साहूकार का बेटा था।

''ब्याज से मन्नाती तिजोरी ने कुशलता से कार्य किया। किसी को भनक तक न लगी। कुछ अस्वाभाविक लगता है,तो लगता रहे, थानेदार गर्म मुट्ठी किये अपने मुकम्मल निवास लौट गया।''[358]

इस घटना ने गिरिजा को विद्रोह की चिंगारी से भर दिया और उन्होंने ग्राम प्रधान का पद ग्रहण करके ही साँस ली और प्रण किया कि बेटे सूरज को पुलिस ऑफिसर बनाकर इसी गाँव में लायेगी।

रात में संयोगवश जब वे सूरज के ऑफिस तक जा पहुँचती है, तो वही युगों–युगों से चली आ रही मजबूरी और नारी–अपमान का नंगा नाच वहाँ भी देखने को मिलता है, जो भोली और मास्टरजी के परिवार के साथ हुआ था। यहाँ की

---

357 मैत्रेयी पुष्पा–खुली खिड़कियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ0सं0–158
358 मैत्रेयी पुष्पा–चिन्हार, बहेलिये, पृ0सं0 38

अनहोनी ने गिरिजा को जीते जी मृतक बना दिया क्योंकि सूरज के रूप में उनकी बरसों की तपस्या नष्ट हो गयी थी। इस आघात को किसी तरह पीकर वो सूरज के तबादले का प्रार्थना–पत्र फाड़कर वापस चली जाती हैं। यहाँ 'बहेलिया' प्रतीक है उन शोषकों का जो हर रूप हर परिस्थिति में शोषण करते ही हैं। कभी शिकारी का रूप धरकर और कभी सहायक बनकर। रूप कोई भी हो, शिकार हमेशा निरीह जानवर रूपी सीधी सादी जनता का ही होता है क्योंकि सभ्यता की खाल ओढ़े इन बहेलियों को हम पहचान भी नहीं पाते। 'मन–माही दस बीस' कहानी चंदना और स्वराज के उस पवित्र प्रेम की है, जो अनुकूल–प्रतिकूल प्रत्येक परिस्थिति में एक जैसी रहती है। इस कहानी में मैत्रेयी जी ने जातिगत समस्या का भी विश्लेषण किया है।

ग्राम विकास अधिकारी स्वराज वर्मा जब गाँव के दौरे पर पहुँचता है तो वहाँ सपने की तरह मन में क्षण–क्षण दिखने वाली चंदना दिखाई पड़ती है। पर स्वराज और वह दोनों अजनवी की तरह रह जाते है। बचपन में हर पल साथ रहने वाले स्वराज और चंदना जब किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं तो उन पर वो सारे नैतिक बंधन लगाये जाते हैं, जो समाज के नियम है। पर लाडली होने के कारण चंदना मनमानी पर उतर आती है। नीची जाति का और गरीब स्वराज ही उसका अमूल्य धन है। बात बढ़ जाये इसके पहले ही लाला (चंदना के पिता) उसे रातोरात ग्वालियर भेज कर पढ़ने को कहते हैं और इधर चंदना की शादी कर देते हैं। यह बेबसी शायद, जीवन की राह बन जाती , पर ससुराल के लोगों का अनैतिक व्यवहार उसे विद्रोह की पराकाष्ठा पर खड़ा कर देता है। जिसकी सजा जेल के रूप में मिलती है। पर उसे अपने किये पर पछतावा नहीं है। उस समय सारे सामाजिक नियम बेमानी हो जाते हैं, जब चंदना जैसी पीड़ित और परिस्थितिवश विद्रोही बनी नारी दुर्गा का भी कोई पक्ष नहीं देता।

''लगभग आधे से अधिक लोग मुझे बेदम करती यातनाओं के साक्षी थे। छज्जों से आँकती नारियों ने प्रताड़ना झेलते मुझे देखा था, लेकिन उस समय सब अधरी को सिये मेरे लिये आगे बढ़ने का रास्ता देते हुए इधर–उधर सिमटकर खड़े

हो गये। मैं हर निगाह में अपराधिनी थी।''[359] स्वराज द्वारा इस विपत्ति का कारण स्वयं को कहने पर चंदना इसका प्रतिरोध करती है–''क्षमा कैसी, स्वराज ! वह तो हमारी अपनी–अपनी जंग थी। जो तुम्हारी थी, उसे तुमने लड़ी और जो मेरे हिस्से आयी, उसे मुझे ही तो लड़ना था, स्वराज। घायल कौन कितना हुआ ? जंग में इसका हिसाब ही कहाँ होता है ?''[360]

कहानी का निष्कर्ष यही सामने लाता है कि मन की भावना अगर एक बार सच्चे अर्थो में किसी को समर्पित हो जायेंतो वह डोर जीवन भर जुड़ी रहती हैं। समय के सागर में लाख झंझावात आये, पर ये डोर दो पवित्र मन को एक साथ उस तूफान से कभी न कभी किनारे पर लाती है।

5.11 धार्मिक रूढ़ियों तथा प्रथाओं अंधविश्वासों की समस्याएँ

मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री पात्र दैहिक स्वतंत्रता के साथ–साथ धार्मिक, सांस्कृकि, सामाजिक एवं आर्थिक–सभी स्तरों पर समानता की मांग करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा 'कथा–साहित्य में 'सती–पूजा' लेख में अपने विचार व्यक्त करती हुई कहती है:

''आँखे झुकाने वाली स्त्री ने सिर उठाया और मैं लिखने लगी–कोई स्त्री तन–मन से पतिव्रता पैदा नहीं होती है, जैसे पुरूष एक पत्नीव्रती नहीं होता। किसी प्रकार का व्रत मनुष्य के जन्मजात गुण नहीं होतां फिर स्त्री के लिए ऐसा कठोर व्रत किसने बनाया, जिसे मूक पशु भी न निभा पाये, स्त्री निभाती रहती है और उसे सिर हिलाने तक का अधिकार नहीं। पारिवारिक शिकंजा अपनी जकड़ पर इठलाता है और समाज व्यवस्था संतुष्ट रहती है।''[361]

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'बिछुड़े हुए' यह एक दम्पत्ति की कथा है। पति सुग्रीव पत्नी को छोड़ देता है और साधुगिरी करता है। ''वह धार्मिक विधि–विधान अथवा कृत्य है जो आंतरिक तथा अध्यात्मिक सौन्दर्य का बाह्यय तथा दृश्य प्रतीक माना जाता है।''[362]

विवाह संस्था का संबंध एक विशेष सामाजिक मान्यता है जो साधारणतया

359 मैत्रेयी पुष्पा–चिन्हार–पृ0सं0 35

360 मैत्रेयी पुष्पा–चिन्हार–पृ0सं0 65

361 मैत्रेयी पुष्पा–सती–पूजा' लेख –पृ0सं0 14

362 मैत्रेयी पुष्पा–'बिछुड़े हुए', पृ0सं0 112

कानूनी अथवा धार्मिक संस्कार के रूप में होती है और दो विषय लिंग के व्यक्तियों के यौन संबंधों को स्थापित करने और उनके संबंधित सामाजिक तथा आर्थिक संबंधों का उन्हें अधिकार देती है। दाम्पत्य जीवन व्यतीत करना चाहिए ऐसा शास्त्रों में लिखा है। विवाह करके परिवार से विमुख हो जाना उचित नहीं है। सुग्रीव यही बात करता है उसे यह पता है कि उसके कारण घर के लोग परेशान होंगे फिर भी वह साधूगिरि करता है। घर का सारा उत्तरदायित्व पत्नी सँभालती है। युवक शंकर सुग्रीव का दोस्त है। उसे समझाता है और घर चलाने के लिए मनाता है। आधे में गृहस्थी छोड़ी है। एक बेटी है मगना। मगना विवाह योग्य हुई है। सुग्रीव अपनी बेटी से मिलना चाहता है। परन्तु जब वह मगना से मिलता है बातचीत कर रहा होता है तो पत्नी चन्दा आती है। और मगना को वहाँ से ले जाती है। चन्दा को ये सब बातें पसंद नही है। वह उसे यह कह कर ले जाती है कि–'चल घर बहुत काम फैला हैं...उसे पता है कि लोग इस प्रकार का मजाक करते हैं और इन बातों से वह बहुत परिचित हो गई है।

धर्म से अनेक बातें जुड़ी हैं। जो मानता है उसके लिए धर्म है, जो नहीं मानता है उसे कोई कुछ नहीं कह रहा। सुग्रीव को ना कोई दंड देता है ना कोई कुछ कहता है। चन्दा ही है जो घर को धरपन दे रही है।

'सहचर' कहानी यह कथा है एक दम्पत्ति की। पति पत्नी जीवन भर एक दूसरे का साथ देते हैं तो ठीक है नहीं तो जिन्दगी अस्त व्यस्त हो जाती है। जीवन में संकटों की कमी नहीं होती है। कभी भी कुछ भी हो सकता है।

छवेली बंसी भैया की पत्नी है। सुशिक्षित, अच्छे घराने से है। ब्याह कर आयी उस समय अच्छा स्वागत हुआ। कुछ दिनों बाद उसे गॅग्रीन हो जाता है। पैर काटने तक की नौबत आती है। बंशी भैया परेशान हैं। खाना–पीना छोड़ दिया है। 'सहचर' के दुःख की वेदना मन में है। 'विभिन्न समयों पर विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार के परिवार समूह रहे है लेकिन बाहुल्य पितृसत्तात्मक परिवार रहा है।'

पहले जब धरती विकास की प्रतिक्रिया से गुजर रही थी सभ्यता स्त्री सत्तात्मक थी। कालांतर में नारी सत्ता पुरूष सत्ता में तब्दील हो गयी और आज स्त्री होने की हीन भावना का मिथ नारी को यह नही सोचने देता है कि कभी उनकी सत्ता प्रधान थी, वह घर की संचालिका थी, स्वामिनी थी और पुरूष उसका सेवक

था जिसका फर्ज था गृहसंचालक का सामान मुहैया कराना।कालांतर में यही सेवक शासक बन गया।[363]

निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा के यौवनागम तक शहरी जीवन की भाँति न सही, किन्तु ग्रामीण समाज में भी शिक्षा का प्रचार–प्रसार होने लगा था और भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त समानता और सम्पत्ति के अधिकार की जानकारी जैसे–जैसे सरकारी व गैरसरकारी प्रयासों से गाँवों तक पहुँची, गाँव की स्त्रियों में भी नवीन चेतना और जागरूकता के लक्षण दिखाई देने लगे। अब तक गूँगी–बहरी बनी अशिक्षित स्त्री भी जाग उठी और उसने अन्याय, भेदभाव व खोखली परम्पराओं की आड़ में होने वाले शोषण का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। मैत्रेयी पुष्पा के ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित उपन्यासों और कहानियों के स्त्री चरित्र उक्त तथ्यों की पुष्टि करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य की स्त्रियाँ अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा, पति की सम्पत्ति में अपने बच्चों के हिस्से, बच्चों के विवाह आदि का निर्णय उन्हें स्वयं लेने की छूट देने की दृष्टि से सशक्त होती चली हैं। 'बेतवा बहती रही' की उर्वशी, 'इदन्नमम्' की मन्दाकिनी, 'अल्मा कबूतरी' की भूरी, कदमबाई तथा अल्मा, 'चाक' की रेशम, गुलकंदी तथा सारंग, 'अगनपाखी' की भुवनेश्वरी, 'झूला–नट' की सरसुती तथा शीलो, 'विजन' की डॉ0 नेहा तथा डॉ0 आभा, 'गुनाह–बेगुनाह' की इला चौधरी, समीना तथा सुरिन्दर कौर, 'फरिश्ते निकले' की बेला तथा उजाला और 'कही ईसुरी फाग' की रजऊ आदि सभी जागरूक और संघर्षशील नारी चरित्र हैं जो संघर्ष करते–करते सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं, लेकिन पीछे नहीं हटते। इसी प्रकार के स्त्री चरित्रों के संघर्ष के परिणामस्वरूप पुरुष वर्ग की आँखें खुल गई हैं और अब वे कुछ हद तक स्त्री को समानता की दृष्टि से देखने को सहमत दिखने लगे हैं।

मैत्रेयी पुष्पा सर्वत्र स्वीकार करती हैं कि उनके कथा साहित्य की विषयवस्तु तथा उनके अनुभव और प्रेरणा का आधार गाँव हैं, पर उन्होंने गाँव के किसानों की कथा न लिखकर संघर्षशील कृषक स्त्रियों की कथा लिखी है। देर से कथा साहित्य लिखने के बावजूद उन्होंने समाज को प्रभावित और प्रेरित करने की दृष्टि से सशक्त

---

363 हंस (मासिक पत्रिका) : सम्पादक–राजेन्द्र यादव, अगस्त 1993, पृ0 सं0–37

तथा अद्वितीय साहित्य लिखा है। अपने लेखन को महिलाओं की स्वतंत्रता, इच्छा और उनके सम्मान से जोड़कर मैत्रेयी पुष्पा ने एक ओर, पाठक वर्ग का अपार स्नेह और सहानुभूति प्राप्त की और दूसरी ओर, वह और उनका साहित्य विवादों का विषय भी बनता रहा। मैत्रेयी पूरी शक्ति और उत्साह के साथ स्त्री मुक्ति की बात करती रही, आगे ब

इस प्रकार स्पष्ट है कि मैत्रेयी मात्र निजी जीवन से ही प्रेरित नहीं थी वरन् अपने आस–पास के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, भावात्मक, धार्मिक जाति व्यवस्था यहाँ तक कि पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति के प्रति जागरूक थी जिसका परिणाम उनके कथा–साहित्य की मार्मिक संवेदना है। यदि संवेदना न हो तो साहित्य कागज के फूल की तरह सुगंधहीन प्रतीत होता है। उनका साहित्य मिट्‌टी की सौंधी सुगंन्ध, भावों के प्रवाह तथा अभिव्यक्ति की कुशलता के कारण उन्हें एक सफल रचनाकार बनाता है।